सकारात्मक स्पंदन पुष्टि – हे कान्हा !

Vibrant Pushti

" जय श्री कृष्ण "

" यमुना "🌷🙏🌷

हमारी संस्कृति में और हमारे इतिहास में " गंगा - यमुना "

मूलभूत आचार्यों ने बार बार स्पर्श करवाया। वह खुद उनके ही सानिध्य में अपना आध्यात्मिक जगाते थे।

इसका अर्थ यह हुआ कि यह दोनों सरिता या धारा को अवतरण में प्रज्वलित किया हैं।🙏

इनकी बूंद - इनकी लहर - इनकी धारा - इनका एकात्म होना कोई असाधारणता हैं। जो हमें अवश्य जाननी और पहचाननी चाहिए अगर हमें आध्यात्म पाना है - होना हैं - दासत्व पाना हैं - मुक्त होना हैं या परब्रह्म में लीन होना हैं।

यह आचार्यों एक एक बूंद - लहर और धारा से जुडे थे। तब ही वह अपने आपको कक्षित - रक्षित और शिक्षित पाया 🙏

हम आडंबर, अंधश्रद्धा और अज्ञानता से यह सरिताओं को ऐसे ही छोड़ दें तो हमारा स्व आध्यात्म नष्ट हो जाता हैं।

हम चाहे कितने ही उनका स्मरण पाठ, पूजा और गुणगान कर लें।

हमारा संस्कार, व्यवहार और आचार इनसे जुड़े हैं। हम इन्हें नहीं समझेंगे तो हम कुछ नहीं हो सकते - एक साधारण सा जीव बस जी गया चाहें कितनी भी भौतिकता का मालिक हो।

सोच लो! 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कौन नहीं अपना!
एक ही धरती
एक ही आसमां
एक ही सूर्य
एक ही चंद्र
एक ही सागर
एक ही हवा
एक ही परमात्मा
स्व मन से हमने कर दिया विभाजन
मेरा मेरा मेरा मेरा
मेरा मेरा में
धरती गंवाई
आसमां गंवाया
सागर गंवाया
हवा गंवाई
परमात्मा गंवाया
हम मन मनुष्य से मुमुक्षु देवता
हम तन तपस्या से तनुनवत्व आत्मा
हम धन धान्य से धार्मिक दाता
तो भी भिन्न विभिन्न विचार वर्तता
इतना तोड़ा - इतना छोडा इतना लुटा
न कोई किसीका न कोई अपना
अवश्य सुनो 🌷🙏🌷
हर कोई सत्य
हर कोई श्रेष्ठ
हर कोई उच्च
हर कोई धनवान
तो भी हर कोई परेशान!
क्यूं!
छोड़ो यह तोड़ना 🙏
छोड़ो यह लुटना 🙏
छोड़ो यह मारना 🙏
सबकुछ हमारा ही है तो साथ साथ आनंद आनंद आनंद महकाना 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आज जो उम्र पर हम है, गौर करे हम कहां हैं?

हमारी पास धन दौलत, अमीरी खेत खलियान जो मन चाहा है वह है 👍

कुटुंब में साथ साथ आन बान और शान से जीते हैं 🙏

धर्म धारणा पारायण में डूबे हैं 🙏

मान सम्मान पाते हैं - मिलते हैं और बस कहते रहते हैं

श्री प्रभु की कृपा - मातापिता का आशीर्वाद और हर एक का स्नेह और साथ 👍

वाह! 🌷🙏🌷

उम्र उम्र का काम करता है

नसीब नसीब का काम करता है

भाग्य भाग्य का काम करता है

दयालु परमात्मा दया की कृपा बरसाता है

अति उत्तम 🌷🙏🌷

कौन कहता रहता हैं? हर कोई 🙏

हमारा मन, तन, धन और जीवन श्रेष्ठ श्रेष्ठ और श्रेष्ठ

आपको हमारा प्रणाम 🙏

यही कक्षा - यही रक्षा और यही शिक्षा सबको मिले तो! 🌷🙏🌷

सोचना! अवश्य सोचना! 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
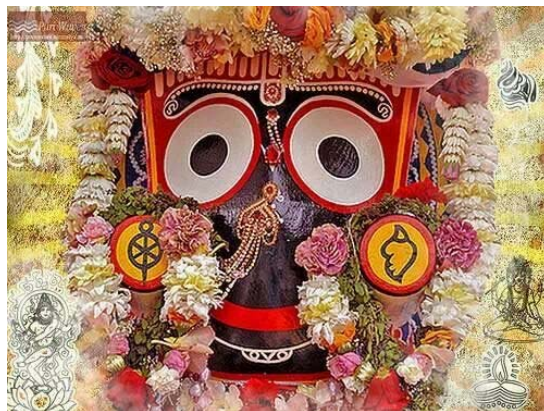
डगर डगर
कदम कदम
साथ साथ
पास पास
अपने पराये
दूर नजदीक के
बार बार स्मरण कराये
बार बार सत्संग कराये
बार बार संस्कार समझाये
बार बार जीना सिखाये
बार बार कुछ कुछ समझाये
बार बार कुछ पाये
सच! अजब गजब का है संसार
कहते कहते रहते हैं
सुनते सुनते रहते हैं
बोलते डोलते रहते हैं
जैसा भगवान रख्खे ऐसे रहते हैं।
धर्म कभी भी किसीको कष्ट नहीं देता
धर्म कभी किसीको हैरान नहीं करता
धर्म कभी किसीको दु:खी नहीं करता
धर्म कभी किसीको तकलीफ़ नहीं देता
हम मतवाले
हम अंधश्रद्धा वाले
खुद से खुद का दु:ख रचे
खुद से खुद का कष्ट बांधे
खुद से खुद की तकलीफ़ भरे
और दोष दें भगवान को
और दोष दें जन्म देने वाले को
गजब हैं यह संसार के मानव
गजब हैं यह जगत के मानव
गजब हैं यह दुनिया के मानव
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
जो संभलें तो हम ऐसे
जो संभलें तो तुम ऐसे
हे प्रभु! 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक वैज्ञानिक था, उन्होंने अपने आपको टटोलना शुरू किया - जैसे उठते ही वह अपने नैनों से जो भी देखता था और उनके जीवन में उसकी क्या असर होती थी और यही असर से वह कैसे जी रहा होता हैं वह लिखता रहता था।

अनेकों दिन बीत गए, वह ऐसे ही बैठा था और उनके हाथ वह डायरी लगी। वह तारीख आधारित पढ़ने लगा तो वह इतना अचंभित हो गया की क्या मैं ऐसा हूं!

जो स्नातकता - जो संस्कार - जो शिक्षा और जो उनकी नित्य क्रियाओं थी उनमें कहीं जीवन व्ययता उन्होंने तय किए सिद्धांत और नीति विरुद्ध थे। वह सोचने लगा - ऐसा कैसे?

मैं तो सत्याग्रही तो इतना आडंबर कैसा!

मैं तो सैद्धांतिक तो इतना बेदरकार कैसा!

मैं इतना स्वच्छंदी तो इतना अस्वच्छ कितना!

मैं इतना दयालु तो इतना अहंकारी कैसा!

मैं इतना निर्मोही तो इतना लालची कितना!

मैं इतना परोपकारी तो इतना स्वार्थी कैसा!

मैं इतना धर्म परायण तो इतना अधर्मी कैसा!

ओहहह!

मेरे मित्रों! यह सत्य है 🙏

नहीं तो आज हमारी दुनिया - हमारा जगत - हमारा संसार और हमारा जीवन अज्ञानी, अहंकारी, आडंबरी, अंधश्रद्धा भरा और अधंकार भरा नहीं होता 🙏

हम धन दौलत - अमीर गरीब - अधर्म - और कहीं तफावतों में नहीं फिसलते 🙏

हम काया माया में नहीं बंधते 🙏

माफ़ करना 🌷🙏🌷

यह तो एक उर्जा जागी वह प्रज्वलित करने की कोशिश करता हूं 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "🌷🙏🌷

" कान्हा " न तु मुझसे रुठे न मैं तुझसे रुठु

" कान्हा " न तु मुझसे बिगडे न मैं तुमसे बिगडु

" कान्हा " न तु मुझसे खफा न मैं तुझसे खफा

" कान्हा " न तु मुझसे तन्हा न मैं तुमसे तन्हा

" कान्हा " न तुमसे छुपे न मैं तुमसे छुपा

" कान्हा " न तुमसे अलग न मैं तुमसे अलग

" कान्हा " मुझे पता है तु मुझसे कितना प्यार करे!

पर मुझे इतना अवश्य पता हैं मैं तुमसे कितना प्यार करुं!

" कान्हा " मुझे पता है तु मुझसे कितना तरसता है!

पर मुझे पता है मैं तुम्हारे लिए कितना तरसता हूं!

" कान्हा " मुझे पता है तु मेरा कितना ख्याल करें!

पर मुझे पता है मैं तुम्हारे लिए कितने ख्यालों में खोया हूं!

मेरा दिल ही एक ऐसी स्थली है जहां तु चैन से ठहर सके 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्याम ने पुकारा श्याम ने बंसी बजाया

सूर सूर ऐसा छेड़ा सुना वह तड़पाया

कोई कहें मुझे पुकारा कोई कहें श्यामा

कोई कहें हम गोपियां कोई कहें प्रिया

सूरदास कहें श्याम उन्हें पुकारा जिसमें बसे राधा 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जहां नजर उठती हैं वहां ऐसा विज्ञापन दिखता हैं - आज यहां श्री मद भागवत कथा है - आज यहां अष्टसखा चरित्र प्रवचन हैं - आज यहां श्री नाथजी प्राकट्य चरित्र लीला हैं - आज यहां श्री चौरासी कोस व्रज यात्रा का रजिस्ट्रेशन है 🌷🙏🌷

हर कोई कोई न कोई सत्संग, प्रवचन, कथा या यात्रा में डूबा रहता हैं।

तब मन में एक ख्याल उठा - क्या यही जीवन का लक्ष्य हैं जो सदा यही में डूबा रहना या यही से कुछ पा कर कुछ स्व में जगाना और जीवन को योग्य और मधुर करना?

हर रोज दर्शन करने पहुंचते बस यही ही देखना और ऐसी वैसी बातें कह कर सुन कर अपने व्यवसाय में खो जाना।

ऐसा दिन दिन - वर्ष वर्ष - दशक दशक और आखिर जीवन पर्यन्त 🙏

यही यापन से देखा समाज बस ऐसे ही जी रहा हैं और मैं यही समाज का सभ्य मैं भी ऐसे ही जीवन पर्यन्त निभा रहा हूं।

पर एक दिन एक ऐसी घटना घटी और मैं झग जगा गया, मुझे यही दर्शन करते मुझे किसीने टटोला - ओय! क्या करता रहता हैं? तु हर रोज मुझे मिलने आता हैं तो तुझे मेरा संकेत या कोई द्रष्टि लीला तुझे कुछ कहती नहीं हैं?

मैं अचंभित रह गया! और अपने मन और द्रष्टि को बटोर कर झांकने लगा - तो समझ आया की मुझे ऐसे ही मानव समुदाय और समाज के लिए " सैद्धांतिक और व्यावहारिक समझ से सेवा में डूबना हैं " न कोई व्यवहार - न कोई अर्थोपार्जन अपेक्षा - न कोई संगत 🙏

बस! जो कौटुंबिक हैं यही से सेवा अर्चना अर्पण करते जाना।

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

यही करते करते जो जो निकटता - स्पर्शता और जागृतता जागी इनमें " श्री वल्लभाचार्य चरित्र " का सत्संग पाया 🙏 मन दौड़ने लगा, तन थिरकने लगा और आत्मा विचलित होने लगा। देह साधन और कौटुंबिक साथ और श्री पुष्टि मार्ग समाज ने मुझे कदम भरने के लिए ऐसी भूमिका तैयार करने लगी की बस चारों ओर -

श्री अष्टसखा

श्री वल्लभ 🙏

श्री यमुना 🙏

श्री गिरिराज 🙏

और

श्री श्रीनाथजी 🙏

क्रमशः 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे कान्हा! मैं एक अधूरा

हे कान्हा! मैं एक अज्ञानी

हे कान्हा! मैं एक अहंकारी

हे कान्हा! मैं एक अभिमानी

हे कान्हा! मैं एक विरही

हे कान्हा! मैं एक अतृप्ति

हे कान्हा! मैं एक त्रासदी

हे कान्हा! मैं एक घृणास्पद

हे कान्हा! मैं एक अनपढ़

हे कान्हा! मैं एक.........

मुझसे तु दूर या तुमसे मैं दूर

नहीं नहीं नहीं नहीं

दूर दूरी की रीत नहीं

अधूरी अझूरी सी प्रीत नहीं

तु मेरा मैं तेरी यही माने जीया

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
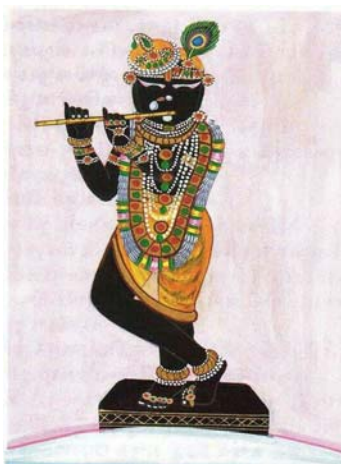
" वल्लभ! वल्लभ! वल्लभ! वल्लभ! "

बार बार सुना बार बार सुने

बार बार गाया बार बार गाये

बार बार कहा बार बार कहे

बार बार स्मरा बार बार स्मरे

क्यूं? नाम स्मरण सूर और तरंग में जो स्पंदन जागते हैं - स्फूरते है - उठते हैं 🙏 अदभुत!🌷

हमारे नैन - हमारा मन - हमारी श्वासे - हमारी धड़कन कितनी शांत और एक लय में घुटती हैं।

ऐसा क्यूं?

क्यूंकि हमने श्री वल्लभ के समाज में जन्म धरा है। हमने श्री वल्लभ चरित्र को छुने का विश्वास भरा पुरुषार्थ किया हैं। हम श्री वल्लभ की रचनाओं को छु कर समझने की कोशिश कर रहे हैं। हम श्री वल्लभ के सानिध्य पाने के लिए उत्सुक हैं। हमारा मन उनकी ओर आकर्षित होता जा रहा हैं। हम श्री वल्लभ के बताए मार्ग और सिद्धांत पर जीवन व्यापन की कोशिश कर रहे हैं।

ओहहह!

यह श्री वल्लभ का चरित्र - दर्शन और सत्संग हममें आमूल परिवर्तन कर रहा हैं जिससे हममें अदभुत स्पंदन जागते हैं। 🌷🙏🌷

" श्री वल्लभ प्राकट्य " संप्रदाय जो चारित्र्य करें पर उनका प्राकट्य अनेकों संकेत और वैज्ञानिक सिद्धांत सिद्ध करते हैं। 🙏

क्रमशः

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक साहित्यकार था। वह साहित्य में ऐसा निपुण था की हर अक्षर और शब्द का व्याकरण अर्थ के साथ अर्थपूर्ण व्याख्या करता था। उनके हाथ षोडश ग्रंथ लगा और जैसे उन्होंने यह पढ़ा " मुरारी पद पंकज सफूरदमन्द रेणुत्कटाम "

अरे! यह कैसी लिखावट? ऐसा कैसे कह सकते हैं?

मुरारी पद पंकज - मुरारी के पद पंकज जैसे है।

मुरारी पद पंकज स्फूरदमन्द - मुरारी के पंकज जैसे पद से दमन्द स्फूरे।

मुरारी पद पंकज स्फूरदमन्द रेणुत्कटाम - मुरारी के पंकज जैसे पद से उत्कट रेणु दमन्द से स्फूरे।

वह सोचता ही रहा - सोचता ही रहा और अपने मन मनस्का और तन तनस्का से वह व्याकरण अर्थ करता करता अपने आपको मुरारीमय कर दिया। जो भी कुछ करता तो साथ साथ यह भी उच्चारता - " मुरारी पद पंकज स्फूरदमन्द रेणुत्कटाम "

ऐसी मशगुलता में वह डूब गया तब उनके नैनों में से बूंद बूंद बरसने लगा, बरसते बूंदों से वह अपने आपको भिगोने लगा, भिगते भिगते वह इतना भिग गया की उनका हर अंग भिग गया। पूरा बदन शीतल हो गया - कण कण से मधुर महक उठने लगी, मन शांत और स्थिर हो गया।

तब उनके चैतन्य नैनों को संकेत मिला - हे उत्कट रेणुओं से स्फूरे विरह नैनों अपनी पुष्टि दिव्य द्रष्टि से देखो 🙏

साहित्यकार ने अपने मूंदे नैनों को धीरे धीरे खोला तो सामने पाया " मुरारी पद पंकज " 🌷🙏🌷

वह अचंभित रह गया और इतनी उत्कट आनंद की अनुभूति पाने लगा की वह

बार बार स्मरण करने लगा उस रचनाकार का जिसने यह पंक्ति की रचना की थी - उनका हृदय आत्मा से बार बार नमन करके उनका धन्यवाद करता था। उनकी संपूर्ण एकात्मकता प्रार्थना करता था - जिसने यह रचना रची है उसका मुझे साक्षात्कार हो। 🙏

तब ही एक बैठकजी पर बिराजे श्री वल्लभाचार्य का दर्शन उन्हें हुए 🌷🙏🌷

वह पुकार उठा - हे वल्लभ! हे वल्लभ! आपकी कृपा 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
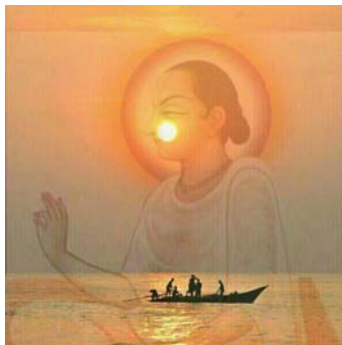
यह एक वैज्ञानिक सिद्धांत है

" जो मन जो माने वही वह मानव स्वभाव का है। "

हम विज्ञान के सिद्धांतों को मानते हैं तो हम अवश्य वही सिद्धांतों आधारित ही सबकुछ करेंगे। चाहे उनके साथ साथ - इस पास - आचार व्यवहार कैसे भी विषयों का हो। वह वही सिद्धांतों से ही अपना आचार व्यवहार करेगा।

पर

जो उन्हें डरा कर - जबरदस्ती कर - गैर मार्ग दोर कर हम मजबूर करेंगे तो वह कमजोर हो कर तथ्यों हीन जीवन जीयेगा। 🙏

हमारा भारत - हमारा हिन्दुस्तान ऐसा है 🌷🙏🌷

अकेले बैठकर सोचो या साथ साथ सोचो

अब हमें इनमें परिवर्तन करना है

जो प्रथम स्व स्वीकार और अपनाने से ही आयेगा 🌷🙏🌷

तो शुरू करे 👍

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक साधु था जो दिन रात सदा श्री प्रभु भजन और सत्संग में लीन रहता था और सदा श्री कल्याणरायजी हवेली पर मंगला से गौचारण या ग्वाल के दर्शन तक फल बेच कर अपना जीवन निर्वाह करता रहता था।

कभी किसीको कोई भी प्रकार की तकलीफ़ हो तो सेवा करके अपने श्री प्रभु स्मरण में मग्न रहता था। ऐसे ऐसे कहीं बरसों बीत गए और वह जीवन के आखरी पड़ाव पर जा पहुंचा।

वह अपना नित्य पुरुषार्थ निभाता और आनंदमय जीवन बिताता था। एक दिन एक दर्शनार्थी ने हंसते हंसते पूछ लिया - हे साधुदास! आप इतने बुजुर्ग हो गये हो और कहीं वर्षों से अपना जीवन यही स्थली पर बिताए तो क्या आपको कभी श्री प्रभु दर्शन हुए?

वह साधु प्रश्नोक्त व्यक्ति की ओर एक नजर से देखते और दो हाथों से नमन कर विनम्रतापूर्वक कहा - हां! मैंने श्री प्रभु के अवश्य दर्शन किए हैं 🙏

वह प्रश्नोक्त व्यक्ति अचंभित हो कर दूसरा प्रश्न पूछा - वह कैसा है?

साधुजी ने फिर से प्रणाम करके कहा - बिल्कुल हर्षोल्लासी 🙏

मधुर वदनं - मधुर ह्रदयं - मधुर रुपं - मधुर करुणं - मधुराधिपते रखिलं मधुरं 🙏

व्यक्ति अत्यंत भावविभोर हो गया और एक और प्रश्न पूछ डाला - कहां दर्शन में मिले थे?

साधुजी के नैनों से पुष्टि करुणा बहने लगी - मुखड़ा तेजोमय हो गया और अति संभाल कर कहा - मुझे दर्शन दिए यह हवेली के द्वार पर 🙏

व्यक्ति सहमा उठा और अपने आपको अति घिनौना समझ कर साधु को प्रणाम कर चल दिया। वह मन से - तन से और समय से बैचैन हुए अपने आपको अत्यंत निम्न समझ कर दु:ख भरे चेहरा से खिसक गया।

दूसरे दिन फिर वह मंगला दर्शन में भेंट हुई - वही चेहरा - वही भाव और वही ही गति से चला गया। ऐसे दिन पर दिन बीत गए।

एक सुबह फिर वह व्यक्ति साधुजी के सामने खड़ा हो गया और प्रणाम करके पूछा - हे साधुजी! मैं करीब पचास वर्ष से यह हवेली मंगला दर्शन के लिए अचूक रहता हूं और सदा विशुद्ध विश्वसनीय जीवन निर्वाह में डूबा संसार में जीता हूं साथ साथ एक आश लगाए फिरता रहता हूं - मुझे दर्शन होंगे - मुझे स्वीकार करेंगे 🙏

पर न कोई संकेत - न कोई स्पंदन - न कोई समय सूचकता। बस एक ही समय धारा बहती है - बहती है और बहती है 🌷🙏🌷

आप मुझे कोई मार्गदर्शन दो तो मैं भी कुछ झांकी पाऊं 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

क्रमशः

कल का आगे.......

जो साधुजी ने कल वह दर्शनार्थी व्यक्ति की प्रार्थना सुनकर और उनकी जिज्ञासा भरी तीव्रता देखकर उन्होंने एक ऐसी भूमिका रची - हर रोज वह दर्शनार्थी को सामने " जय श्री कृष्ण " कह कर उन्हें वंदन करने लगे। एक दिन के बाद दूसरे दिन और दिन ब दिन वह " जय श्री कृष्ण " और वंदन से इतना व्यथित और लज्जित कर दिया की वह व्यक्ति के अंदर वेदना और संताप जागने लगा।

वेदना उन्हें एक भक्त साधु मुझे बार बार " जय श्री कृष्ण " और वंदन करे - मुझमें इतनी तो क्या महत्ता है? वह लज्जित और सहमा सहमा रहता था।

संताप इसलिए उठता था की मैं कैसा देहधारी आत्मा हूं जो मुझे श्री प्रभु का संकेत या झांकी भी नहीं होती हैं!

दिन पर दिन बीतने लगे एक दिन दर्शनार्थी जैसे श्री कल्याणरायजी हवेली पहुंचा और प्रथम वह साधु जी को " जय श्री कृष्ण " कह कर वंदन किया 🙏

साधु जी पुलकित हो उठे और नाचते नाचते कहने लगे

भाई! तुम श्री वल्लभ के निकट पहुंच रहे हो 🙏

आज मेरा प्रयत्न सफल रहा की तुम जब भी हवेली में दर्शन करने आते हर व्यक्ति में श्री प्रभु का दर्शन नहीं देख सकते हो तो तुम्हें बिराजमान श्री प्रभु के संकेत और स्पंदन कैसे पा सकोगे! आज तुमने जो मुझे " जय श्री कृष्ण " के साथ वंदन किये 🙏

यही प्राथमिक संकेत है श्री प्रभु दर्शन का 🙏

दर्शनार्थी व्यक्ति आनंदमय हो कर वह भक्त के चरण पकड़ लिए, वह अभिमान रहीत अहंकार विहिन हो गया। आज उन्होंने पुष्टि मार्ग का " दासत्व " का सिद्धांत पाया 🙏

जैसे गर्भगृह में पहुंचा और श्री प्रभु विग्रह का दर्शन किया तो उन्हें कुछ अजब सी अनुभूति हूई।

उनके नैनों स्थिर और अपलक श्री प्रभु को निहार रहे थे। तन मन में स्पंदन उठ रहे थे।

दर्शन की पूर्णता तक वह वहां का वातावरण में डूबा रहा, जैसे टहल हूई वह बाहर आते ही श्री साधु भक्त को लिपट गया। आज उनकी खुशी का ठिकाना नहीं था।

श्री साधु भक्त ने कहा - भाई! यही ही प्रारंभिक लीला है पुष्टि प्रणय की 🙏

धीरे धीरे यह रीति में डूबते रहो 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" जय श्री कृष्ण " " जय श्री कृष्ण "

मन और नयन पटल पर जब स्फूरते हैं तब हमारी आत्मा को ऐसे स्पंदन स्पर्श होते हैं जो उन्हें अधिक तेजोमय करता हैं।

यह अनुभूति श्री वल्लभ को प्रथम मिलन श्री श्रीनाथजी से गोवर्धन पर्वत पर हूई 🌷🙏🌷

वह जैसे जैसे श्री श्रीनाथजी के प्राकट्य स्थली पर पहुंचे, मन और नयन द्रष्टि का मिलन हुआ - श्री नाथजी पुकार उठे - वल्लभ!

श्री वल्लभ शरणागति से नमन करके अति हर्षोल्लास से पुकार उठे - " जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

और दोनों का प्रगाढ़ मिलन 🙏

आध्यात्म आत्मा का परमात्मा से एकात्म 🌷🙏🌷

पुष्टि मार्ग का प्राथमिक सिद्धांत - जो स्व आत्मा को, स्व मन को, स्व तन को और स्व जीवन को सदा श्री कृष्णमय में डूबोते रहे तो अवश्य प्रथम मिलन की लीला प्रकट हो 🌷🙏🌷

" जहां जहां मन दौड़े वहां मुझे मेरा कान्हा दिशे "

" जहां जहां मेरा नयन पहुंचे वहां वहां मेरा वल्लभ प्रक्टे "

तो स्व जन्म जीवन पुष्टि संस्कार सिंचे

तो स्व संसार पुष्टि संस्कृति से मधुर बने

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हे वल्लभ! आपने अपने प्रथम मिलन से ही हमें जता दिया की ' अपने ह्रदय में श्री कृष्ण बिराजें

यही श्री कृष्ण हर हर में निहाले

तो " जय श्री कृष्ण " " जय श्री कृष्ण "

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

प्यार देह भी है

प्यार महक भी है

प्यार वचन भी है

प्यार आत्मा भी है

प्यार जन्म जन्मांतर का बंधन भी है

प्यार नैनों का एकरार हैं

प्यार सांसों का गुल जाना हैं

प्यार देह से सदेह होना हैं

प्यार विश्वसनीय वचन है

प्यार आत्मा से परमात्मा पवित्र पहचान हैं

प्यार की द्रष्टि अपलक हैं

प्यार की उर्जा प्रजवल्लित हैं

प्यार का देह विशुद्ध हैं

प्यार का वचन अतूट हैं

प्यार का आत्मा पुरुषोत्तम हैं

प्यार का परमात्मा आनंद हैं

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे कान्हा!

तुम यह नैनों से दूर हो कर दिखाओ तो जाने तुम कितने छलिये हो 🌷

हे कान्हा!

तुम यह मन से बिछड़ कर दिखाओ तो जाने तुम कितने मनचले हो 🌷

हे कान्हा!

तुम यह तन से तुट कर दिखाओ तो जाने तुम कितने तपस्वी हो 🌷

हे कान्हा!

तुम यह धन से लुट कर दिखाओ तो जाने तुम कितने ज्ञानी हो 🌷

हे कान्हा!

तुम यह जीवन से छुट कर दिखाओ तो जाने तुम कितने प्रेमी हो 🌷

कान्हा! तुम छलिये

कान्हा! तुम मनचले

कान्हा! तुम तपस्वी

कान्हा! तुम ज्ञानी

कान्हा! तुम प्रेमी

तो मैं भी तुम्हारा दास हूं 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे कान्हा!

मैं तुम्हारी हूं तुम मेरी मांग में व्रज रज भर दो 🙏

मैं तुम्हारी हूं तुम मेरे मन में नाम स्मरण भर दो 🙏

मैं तुम्हारी हूं तुम मेरे तन में विरह आग भर दो 🙏

मैं तुम्हारी हूं तुम मेरे जीवन में पुष्टि पुरुषार्थ भर दो 🙏

मैं तुम्हारी हूं तुम मेरे नैनों में लीला चरित्र भर दो 🙏

कान्हा! सिर्फ तुम्हारी 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
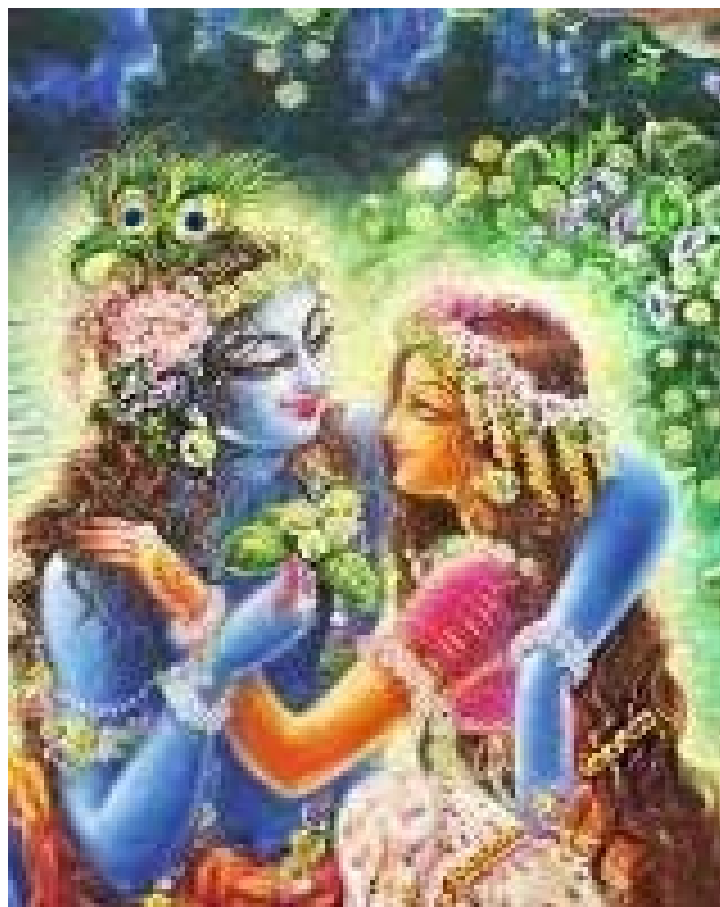
एक स्त्री है जो नित्य नूतन श्री प्रभु स्मरण में रहे। उनकी हर प्रवृत्ति में वह रीति - कृति पूर्व और पूर्ण " श्री वल्लभ " ऐसा उच्चारण उनके मुख से अनायास निकल पड़े।

गृहकार्य में भोजन, जल, सब्जी, आदि तैयार होते ही " श्री वल्लभ " 🙏

अपने धंधा किय कार्य में - ओफिस वर्क हो या उत्पादीय काम हो - सलाह सूचन हो - आदि उनके मुख से निकल ही आये " श्री वल्लभ " 🙏

एक रात वह अपनी पथारी में दिनचर्या के मनन में पड़ी रही थी तो सोचते सोचते वह कहीं बार " श्री वल्लभ " श्री वल्लभ " ऐसा सहसा निकल रहा था। तब ही उनके मानस पटल पर यह क्रिया आई - अरे मैं यह " श्री वल्लभ श्री वल्लभ " कैसे उच्चारित करती रहती हूं! और इससे मुझे आंतर आनंद और शांति अनायास से अनुभव करती हूं 🙏

मुस्कुराती आनंदमय हो कर वह अपने आप में खो जाती हैं।

बार बार हर रोज ऐसे डूबते डूबते वह आसपास के वातावरण और कौटुंबिक जनों को भी वह खुश रखती हैं।

उनके साथी और संबंधी भी उनसे सुखी और संतुष्ट रहते थे और उनकी हर प्रवृत्ति में उत्साहित थे।

हर कोई वह स्त्री के बारे में ऐसा ही सोचता था - सदा आनंद भरी, सदा काम में उत्सुक, सदा मृदु वचन, सदा आचारी, प्रमाणिक और विश्वसनीय 🙏

न रोग - भोग और कष्ट 🙏

हर व्यवहार शुद्ध और पवित्र

हर वृत्ति निखालस और मददगार

धीरे धीरे हर कोई उन्हें " श्री वल्लभ " श्री वल्लभ " कहने लगे और करने लगे। 🙏 सन्मान और आदर हर कोई देते और निभाते थे।

समाज के जीवन चक्र आधारित एक दिन एक व्यक्ति उनके पास आयी और उन्होंने ने ऐसी उलझन स्त्री को बताई की वह स्त्री के मुख से बार बार निकल गया - " श्री वल्लभ " श्री वल्लभ "! वह सहमा गई, वह गभरा गई, वह डर गई 🙏

घड़ी घड़ी - " श्री वल्लभ श्री वल्लभ " ऐसा पुकारने लगी। वह श्री वल्लभ को बार बार विनंती करके कह रही थी - श्री वल्लभ अब तु ही संभालना 🙏

जागतिक विडंबना को तो श्री प्रभु खुद नहीं बचे थे तो यह एक स्त्री!

लोक चर्चा का व्यभिचार से कौन नहीं फंसता है! बस यही व्यभिचार में वह स्त्री को फंसा दी।

समय समय और स्व कुशलता से यह स्त्री ने अपने को श्री वल्लभ की प्रेरणा और विश्वास से ऐसा मुक्त किया 🌷🙏🌷 की हर कोई कहने लगे - " श्री वल्लभ श्री वल्लभ "

क्रमशः - कल कहूंगा कैसे निपटाया जागतिक विडंबना भरा व्यभिचार 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" पतंग "

प - प्रिये

तं - तु ही

ग - गति

प - प्रेम

तं - तेरी ही

ग - गली

प - पूर्ण

तं - तादात्म्य

ग - गूंज

प - पुष्टि

तं - तृष्णा

ग - गोपि

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हां! है कुछ पतंग

है कुछ डोर

जो एक आसमां को छुने अपने आपको डोर के हवाले कर जैसे जीआएं ऐसे आखरी सांस तक जीती है

अपना सर्वस्व सोंप कर

अपने आपको एक ऐसी समय की धारा में शामिल करती हैं, जो अपना बलिदान दे कर भी डोर वालें को समर्थन देती हैं।

सच! कितनी अटूली जिन्दगानी हैं।

कितना अनोखा विश्वास

कितनी निराली श्रद्धा

सच! पतंग तु महान हैं 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक दर्शन - एक चित्रजी - एक गृह सेवा - एक डेला - एक मंदिर - एक हवेली हमारी आसपास अवश्य है, यह जो दर्शन, चित्रजी आदि हमारे अपने आपकी श्रद्धा और विश्वास का प्रतीक हैं।

हम उन्हीं ओर देखते हैं तो सोचते हैं वह भी हमें देख रहे हैं।

हममें सदा सत्य और संस्कार की अनुभूति कराते हैं।

ऐसा क्यूं?

ऐसा इसलिए की मैं सत्य हूं, मैं संस्कारी हूं। मेरी सत्यता से मैं मेरी आसपास आनंदमय वातावरण रच सकता हूं - शुद्ध समय काल रच सकता हूं - पवित्र क्रिया संस्थापित कर सकता हूं।

यह अनुभूति में सूरज शामिल होता हैं।

यह अनुभूति में मधुर हवा शामिल होती हैं।

यह अनुभूति में आसपास के पवित्र मन शामिल होते हैं।

यह अनुभूति में सूर संगीत शामिल हो कर गूंजते हैं।

यह अनुभूति में होंठ थडकते हैं

यह अनुभूति में धड़कन कुदती हैं

यह अनुभूति में नैनों नाचती हैं

यह अनुभूति में कंगना खनकती हैं

यह अनुभूति में पायल ठुमकती है

तो गा उठे जग सारा

" जय श्री कृष्ण " " जय श्री कृष्ण " " जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितनी मधुर जीवन लीला 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" एक और एकादशी "

हमारे जीवन में कितनी ही एकादशी तिथि आती हैं - हर एकादशी कोई संकल्प या कोई विचार करता हूं यह एकादशी यह व्रत यह एकादशी यह त्योहार यह एकादशी यह निधि यह एकादशी यह पूजा यह माहात्म्य यह दार्शनिक 🙏

बस एक के बाद एक ऐसी एकादशी जाती हैं जो मैं न समझ पाता हूं और कुछ कर सकता हूं 🙏

बस इतना ही - एकादशी एकादशी एकादशी बोलता रहता हूं।

एकादशी को जो समझे तो

जीवन मधुर

जीवन आनंद

स्वभाव विजयी

मन एकाग्र

तन निरोगी

धन उपयोगी

आत्म वियोगी

अर्थोपार्जन पुरुषार्थी

स्पंदन ज्ञानी

नयन ध्यानी

ऐसी एकादशी की वाणी 🙏

और मैं और मेरा जीवन!

सुख दु:ख भरी कहानी

गंगा यमुना का पानी

मंदिर मंदिर की भटकानी

चारों ओर कलयुग जुबानी

यही मेरी एकादशी विरानी

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ठंड का मौसम

मस्ती भरा दिन

सामने छाई झुमती मूरत

सर पर मयूर पंख

होंठ बजाये मधुर मुरली

नटखट कान्हा दिल ले गया

हां! नटखट कान्हा दिल ले गया

नैनों में काजल कानों में कुंडल

गले में वैजन्ती हाथों में कंगन

प्रेम मतवाला तिरछी नजरीयां

नटखट कान्हा दिल ले गया

हां! नटखट कान्हा दिल ले गया

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "
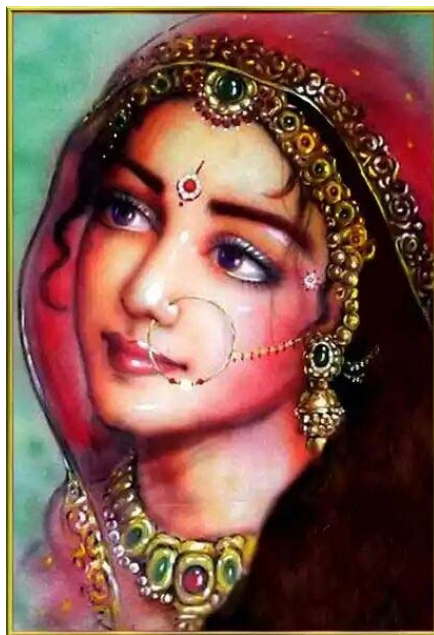
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दोनों तरफ आग लगी

तेरा दिल जला मेरा दिल भी जला

जलते जलते तु मेरी मैं तेरा

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे प्यारी! तु दूर कहीं दूर

दूर दूर और दूर

नहीं नहीं तु मन में चूर चूर

चूर चूर और चूर

कभी नैनों में कभी होंठों पर

कभी सांसों में कभी राहों पर

एक ही तु राधा राधा राधा 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
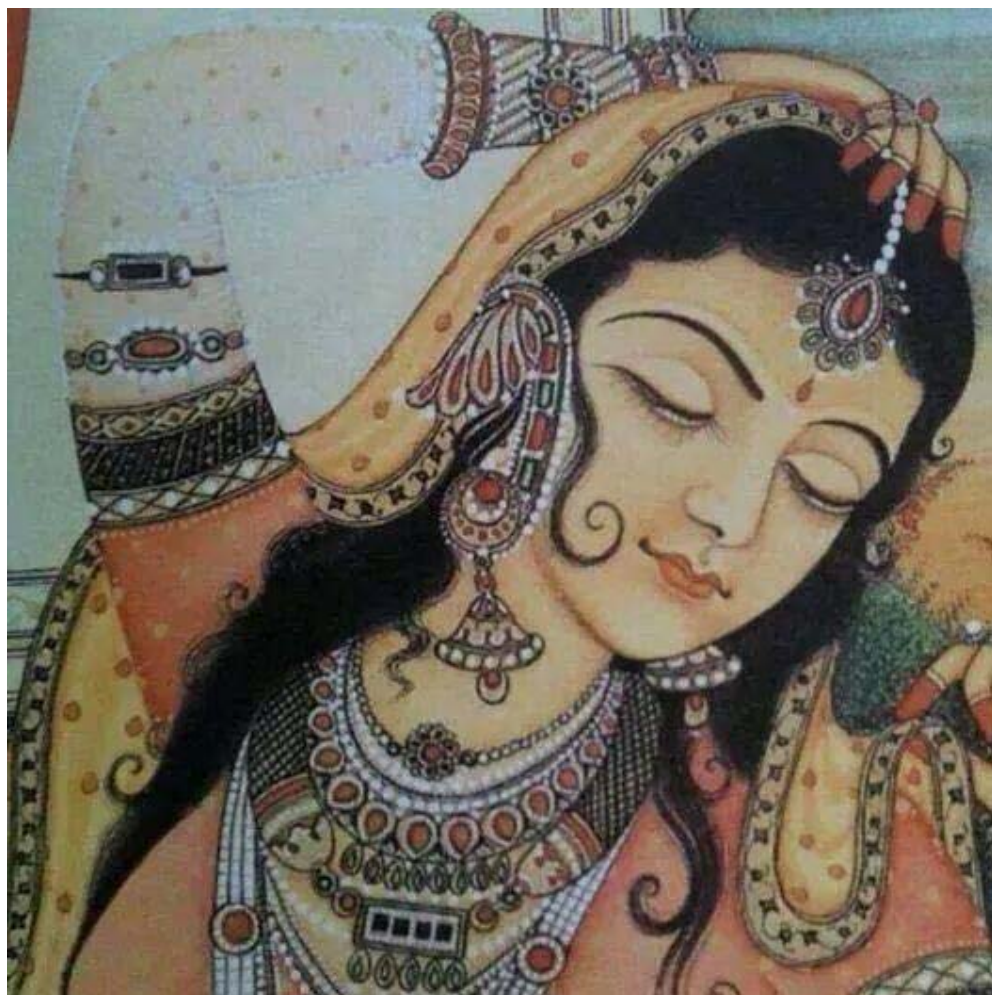
पुष्टि रीत

पुष्टि हित

पुष्टि गीत

पुष्टि मित

पुष्टि प्रीत

पुष्टि अद्‌वैत

जीवन की यह सरल निधि जो अपनाये उन्हें मनभावन तनभावन ह्रदयभावन आनंधधावन परमानंद पावन पुष्टता पाये 🙏

एक नन्ही सी किरण धीरे धीरे ज्योत हो

ज्योत से ज्योत दीपक हो

दीपक से दीपक दीपावली हो

दीपावली से दीपावली से सूरज हो

ऐसी है यह अद्‌वैत का दर्शन 🙏

हे कृष्ण! तु मधुर चरित्र

हे वल्लभ! तु पुरुषार्थ चरित्र

हे अष्टसखा! तु जीवन चरित्र

तुझसे पाया पुष्टि चरित्र 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "
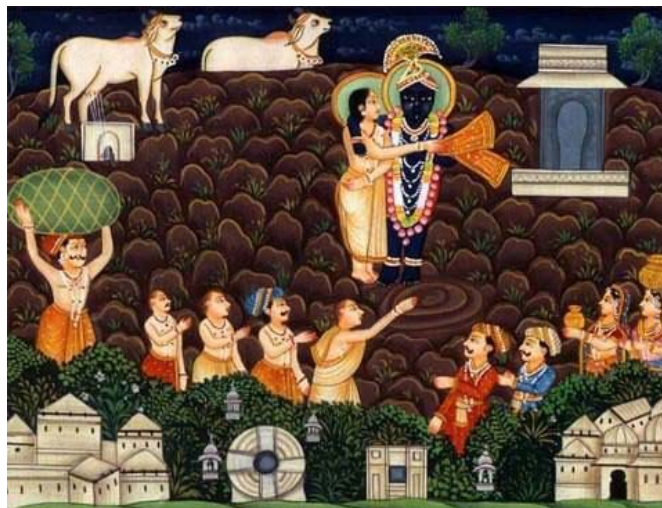
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दूर दूर तक तकता था

न कोई नजर आता था

हां! पर कोई नजर में था

हां! पर कोई मन में था

हां! पर कोई धड़कन में धड़कता था

प्रेम कहता था नहीं नजर ना

विरह कहता था नहीं प्यास बुझा ना

दिल कहता था यही ही एक मन था

जो कहीं दूर जा बसा 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" कान्हा "

तेरा मुखड़ा देखा तो मन दीवाना हो गया

यह स्मरण करते करते तु नैनों में बस गया

ऐसा कया हुआ जो दिल कुर्बान हो गया

तेरे ख्यालों में खोते खोते जीना मधुर हो गया

तेरा मुखड़ा चंदा जैसा

तेरी अदा भंवर जैसी

तु रोज रोज छेड़े प्रेम लीला ऐसी वैसी

तेरे ख़्याल में मनवा नाचें धार धार

सब कुछ लुटते लुटाते जीना भूल गया

लडी तों से नैना होता है तब से दरदवा

न मुंदे पलक नयनवा न सुझे कोई करमवा

तेरी सूरत प्रिये ऐसी न बुझे प्रेम ज्योत जरा सी

जब से मन में जागा कल्याण हो गया

मेरा मन तन धन तुझ पर वार गया

कान्हा ओ कान्हा!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरी तस्वीर मन में बसे इसलिए यह नैनाएं हैं

तेरी महक तन में समाएं इसलिए यह नासिका हैं

तेरी लीलाएं जीवन में जंचे इसलिए यह कर्णे हैं

तेरा मधुर स्मरण याचे इसलिए यह अधरें हैं

तेरा कंथ की कंठी अतूट बंधे इसलिए गला हैं

तेरे प्रेम की अखंड ज्योत जले इसलिए आत्मा हैं

तेरे प्रीत का स्पर्श रहें इसलिए दिल हैं

तेरे प्रेरीत कार्य निपटते रहें इसलिए हस्तों हैं

तेरी धर्म संस्थापना पदयात्रा में सम्मिलित हो इसलिए पैर हैं

सच कान्हा! मेरा कोई ऐसा अंग नहीं जो तेरी प्रेम सेवा निर्माल्य में जुडा न हो 🙏

तु गजब का हैं तु अजब सा हैं तु बेहिसाब का हैं 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
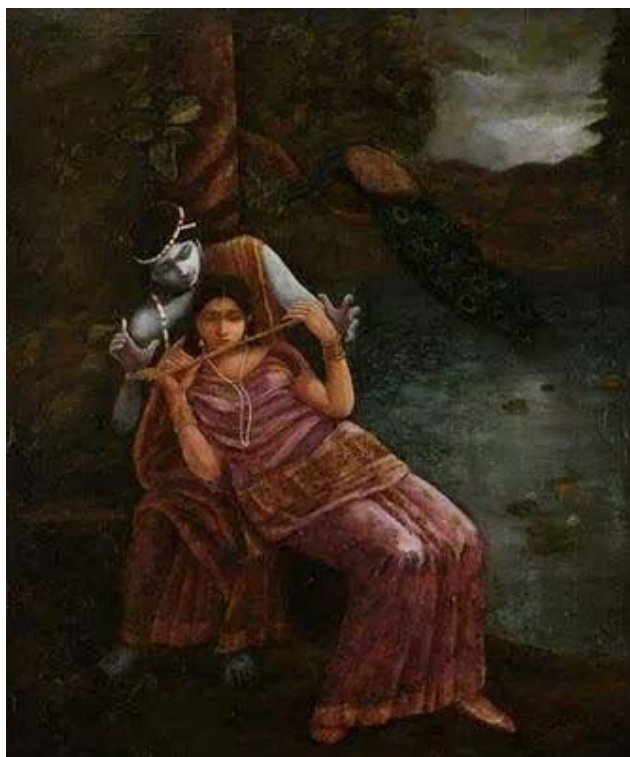
આનંદ પરમાનંદ અને સર્વાનંદ

આનંદ ને સમજી

આનંદ ને લુટાવવો

એટલે પરમાનંદ

પરમાનંદ ની અનુભૂતિ પામતા

સર્વે ને આનંદિત કરીએ

એટલે સર્વાનંદ

વલ્લભ એટલે આનંદ

શ્રી વલ્લભાચાર્યજી એ પુષ્ટિમાર્ગ સ્થાપ્યો એટલે પરમાનંદ

પરમાનંદ લુટાવી સર્વેમાં આનંદ જગાવે

એટલે સર્વાનંદ 🌷🙏🌷

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक कदम चले श्री दामोदर हरसानीजी और पा गये श्री पुष्टि प्रणेता का सर्वस्व 🌷🙏🌷

एक शिला रास्ते की संभाली श्री कृष्णदास मेघनजी ने और पा गये श्री पुष्टि प्रणेता का संरक्षण 🌷🙏🌷

एक अष्टाक्षर पुष्टि सिद्धांत को स्वीकारा श्री वैष्णवजी ने और पाया श्री पुष्टि प्रणेता का आनंद 🌷🙏🌷

हे श्री वल्लभ! 🌷🙏🌷

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

🌷🙏🌷" आशीर्वाद " 🌷🙏🌷

हे सूर्य! जब से सांस लेना हुआ तबसे बड़ी अनुकंपा 🙏

आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी मति सिद्ध करुंगा 🙏

हे धरती! जब से कदम धरा तबसे बड़ी रक्षा 🙏

आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी रज को विशुद्ध रखुंगा 🙏

हे सृष्टि! जबसे मन जागा है तबसे आपका समर्पण 🙏आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी प्रकृति की सौंदर्यता सुंदर रखुंगा 🙏

हे जल! जबसे तनने बंधारण बांधा तबसे आपका सिंचन🙏

मैं आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी रुग्णता की पवित्रता रखुंगा🙏

हे वायु! जबसे जीवन पाया है तबसे आपका सानिध्य 🙏

मैं आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी दया को सार्थक रखुंगा🙏

हे आत्मा! जबसे यह जीव में बसे हो तबसे जीवन तेजोमय करते हो🙏

मैं आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी उर्जा की पुरुषार्थता की ब्रह्मता को सिद्ध करुंगा 🙏

हे मातापिता! जबसे आपने मुझे जन्म दिया तबसे धर्मता धरने संस्कार का हस्त थामा🙏

मैं आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी वात्सल्यता का स्त्रोत बहाऊंगा 🙏

हे परब्रह्म! जबसे आपकी मूलभूतता का नूतन अंश प्रक्टाया है तबसे हर पुरुषार्थ कृति आपकी जगाई 🙏

मैं आपका ऋणी हूं 🙏 मैं अवश्य आपकी पुरुषोत्तमता को सर्वोच्च पर्दापण करुंगा 🙏

मैं आपका दास मुझे सदा आपके सानिध्य में ही रखना 🙏 सदा कृपा बरसाना 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🙏🌷🙏

लगी तो से ऐसी नैना

जहां जहां देखुं वहीं तेरा मुखड़ा

तु मथुरा बसे या द्वारिका

तेरा दिल तो मुझमें ही धड़के

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे कान्हा! एक पल ही इतनी मधुर है

जिसमें तेरी याद है 🌷

हे कान्हा! एक क्षण ही इतनी आनंदमय है

जिसमें तेरी लीला है🌷

हे कान्हा! एक घड़ी ही इतनी तीव्र है

जिसमें तेरी दूरी है 🌷

हे कान्हा! एक अणु घड़ी ही इतनी स्पंदनीय है

जिसमें तेरी करुणा है 🌷

हे कान्हा! एक अणु क्षण ही इतनी अनोखी है

जिसमें तेरी प्रीत है🌷

कान्हा! हे कान्हा! प्रिय कान्हा!

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरा सुंदर चहेरा

उस पर नैन बसेरा

नजर से नजर टकरा

मन से मन संवारा

दिल तुझे पुकारा

यही प्रेम का इशारा

मेरे प्यार का सहारा

आजा मेरे प्यार दीदारा

🌷🌷🌷🌷🌷🌷

तु मेरी सांवरी

मैं तेरा बावरा

तु कहे तु ही हो राधा

तो अवश्य मैं हूं तेरा कान्हा

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

गहराई से सुनना अपनी स्व आवाज से - अपने स्व स्वर से 🙏

"हरि सुंदर नंद मुकुंदा

नारायण हरि ओम् "

"हरि केशव हर गोविंदा

नारायण हरि ओम् "

अवश्य आप में से आनंद की एक सिसकारी निकलेगी और यह सिसकारी अपने अंग अंग में ऐसा स्पंदन जगायेगी 🙏

जो हमें बार बार गुनगुनाने का मन होगा 🙏

बार बार गुनगुनाने से पुकारने से नृत्य का आहवान होगा 🙏

यही नृत्य में श्री कृष्ण का आभास होगा 🙏

यही आभास अवश्य हममें ही श्री कृष्ण को प्रकट करता हैं 🙏

"हरि सुंदर नंद मुकुंदा

नारायण हरि ओम् "

हरि केशव हर गोविंदा

नारायण हरि ओम् "

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सौंदर्य - सुंदरता हमारी यही गूंज में दर्शन होगी 🌷🙏🌷
हे कान्हा!
तेरे स्मरण में निहारु
तेरे दर्शन में निहारु
तेरे ख्यालों में निहारू
तेरे स्वप्न में निहारु
तेरे स्पंदन में निहारु
तेरे कीर्तन में निहारु
तेरे प्रतिबिंब में निहारु
तेरे किरण में निहारु
तेरे रंग में निहारु
तु कहे मैं क्या करूं?
बस तेरी याद
बस तेरी फरियाद
बस तेरी साद
बस तेरी नाद
बस तेरी विषाद
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
तु आ आजा तु आ आजा
संग संग हां मेरे संग संग
है एक तरंग है एक उमंग
जो क्षण क्षण करें मुझे तंग
जो पल पल जगाये रंग रंग
सजाये सर पर मयूर पंख
रखें मधुर बंसी मुख अंग
छेड़े तान प्रेम गूंज बुलंद
मैं दौड़ी चली व्यंग व्यंग
धड़के जीया तेरे संग संग
🌷🌷🌷🌷🌷🌷
हे कान्हा! तु कैसा है रे!
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यार! जैसे नैनों में सूरज नजर आता है

एक किरण जुड़ जुड़ कर एक इतनी विशाल ज्वाला हो गई जो सारे अनिष्टों को नष्ट कर देती है 🙏

यार! जैसे नैनों में सागर नजर आता है

एक एक बूंद से कितना अगाध जल समूह जो सारे तत्वों, वस्तुओं को अपने में समाए अनोखा परिवर्तन लाता है 🙏

यार! जैसे नैनों में जंगल नजर आता है

एक एक पत्ते अपने आपको एक एक के साथ इतना जुड़े रहते है कि सारी सृष्टि हरियाली अन्न और औषधियों से भरी सृष्टि को निरोगी और स्वस्थ रखता है 🙏

यार! जैसे नैनों में धरती नजर आती है

एक एक रज ऐसी बंधी है जो सदा जीवन को सुरक्षित और हर प्रकार के भार वहन कर सकते है 🙏

यार! जैसे नैनों में आसमां छा जाता है

ओहहह! हर कोई उनमें समाये अपने आप में खोये डूबे नजर आते है, हर कोई अपने आप के पुरुषार्थ में रहते है सबको बिना घबराए 🙏

ओहहह! कितनी श्रेष्ठता 🌷🙏🌷

और हम! सबकुछ हममें समाया हुआ है तो भी हम हर एक को तोडते है - छोड़ते है - बिगाड़ते है और नष्ट करते है 🌷🙏🌷

मानव - मनुष्य 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
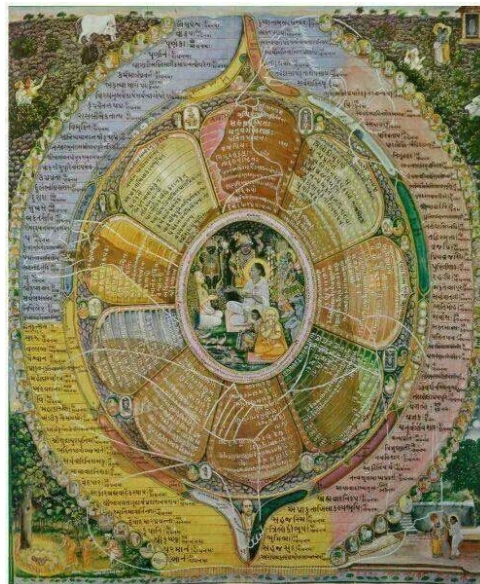
नाथद्वारा पहुंचा " श्री श्रीनाथजी " का दर्शन पाया 🌷🙏🌷

चंपारण्य पहुंचा " श्री वल्लभाचार्य " का दर्शन पाया 🌷🙏🌷

मथुरा पहुंचा " श्री श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी " का दर्शन पाया 🌷🙏🌷

गोवर्धन पहुंचा " श्री गिरिराज जी " का दर्शन पाया 🌷🙏🌷

मुखारविंद पहुंचा " श्री अष्टसखा " के दर्शन पाया 🌷🙏🌷

पुष्टि मार्ग धरा " श्री सुबोधिनीजी " के दर्शन पाया 🌷🙏🌷

गिरिराज परिक्रमा धरी " श्री वैष्णवजन " चरण रज पाया 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

प्रथम वैष्णव - दामोदर हरसानीजी 🙏

" सुन्यो पर समझा नहीं "

भ्रमित वाक्य का अंधश्रद्धा भरा अर्थ हमें सिद्धांत हीन करते हैं 🙏

हम जीवन जीते जीते कितनी शिक्षा पाते हैं - अनुभव करते हैं पर कभी ऐसा अर्थ करते हैं की - कोई कहे वह सुना नहीं और समझा नहीं, बस केवल अपने में मस्त रहना! सोच लो 🙏

अर्थ पथ निर्देशी और सिद्धांत सहीत ही उचित होता हैं 🙏

गैर समझ या अंधश्रद्धा और अंधविश्वास भरा नहीं होता हैं।

हम ज्ञान और विज्ञान और बिना तर्क रहेंगे तो ही हम सही मार्गदर्शन और सही आचरण करेंगे 🙏

यह कोई टिप्पणी या टीकात्मक नहीं हैं - यह शुद्ध व्याकरण अर्थ का पृथक्कृत समझना है 🙏

पुष्टि मार्ग अंधश्रद्धा और अंधविश्वास सिंचित मार्ग नहीं है 🙏 ठोर प्रमाणित और सार्थक सैद्धांतिक मार्ग हैं 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

" प्रथम वैष्णव - दामोदरदास हरसानीजी "

" दमला सो अमला "

श्री वल्लभाचार्यजी ने यह उपनाम और साथ साथ चरित्रता का प्रमाण 🙏

कितना बड़ा गौरव है मनुष्य जीवन का - जो साक्षात श्री आचार्य गुरुवर्य अपने स्व अनुभूति से मनुष्य जीव को प्रदान करे 🙏

यह ही कर्मो का फल है जो श्री कृष्ण कहते है - केवल कर्म करते रहो फल की इच्छा के बिना - जो कर्म योग्य हर कुछ योग्य ही योग्य 🙏

हां सो " दमला सो अमला " यह उपनाम के साथ जो कर्म में जीवन जी रहे है उसकी कृपा 🙏

उपनाम के साथ योग्य प्रमाणता, जो दमलाजी सदा सिद्धांत का अमल करते थे 🙏 सो अमला 🙏

जो सिद्धांत का अमल करे वह अमल ही होते है अर्थात स्वीकार्य और उसमें डूब जाना। जो डूब गया वह तैर गया सो अमला 🙏

अमला - जो सदा विशुद्ध हैं - पवित्र है - अपरसी है - जो सदा प्रसन्न है - परदु:ख भंजन है 🙏

जो श्री वल्लभ को पहचाने वही यह कृपा पावे 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
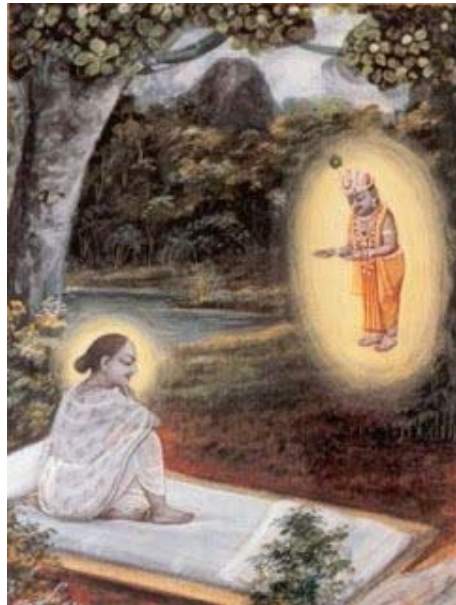
" प्रथम वैष्णव - दामोदरदास हरसानीजी "

हमारी पुष्टि संस्कृति जो सनातन धर्म से उदभवीत इतनी परमानंदीय है जो हममें आनंद ही आनंद में डूबोयें 🌷🙏🌷

" दामोदरदास हरसानीजी " जो प्रथम वैष्णव - जिसके लिए श्री वल्लभाचार्य ऐसा उदगार व्यक्त करे - " दमला यह मार्ग तेरे लिए है " सोचे हम एक चरित्र के लिए कितना श्रेष्ठ प्रमाण 🌷🙏🌷

" यह मार्ग तेरे लिए उदभवीत है " ओहहह! अदभुत 🌷🙏🌷

यह चरित्र में ऐसा क्या है! जो इतनी बड़ी सार्थकता - यथार्थता सिद्ध की है!

हम भी यही सार्थकता और यथार्थता पा सकते है। जो पुष्टि सिद्धांत को सही समझ कर अपने में चरितार्थे 🌷🙏🌷

न अहंकार - न आडंबर - न अंधश्रद्धा - न अंधविश्वास

जो सत्य है वही स्वीकार्य 🙏

हमारे यही जगत जीवन में अपना सही व्यक्तित्व को जगाना है और सत्यता का सैद्धांतिक आचरण करना है 🌷🙏🌷

हम आये जगत में जो लेकर उन्हें अति उत्तम में प्रचंड प्रज्वलित कर अपने को तेजोमय होना है 🙏

श्री दामोदरदास हरसानीजी ने पुष्टि वैष्णवता से पुष्टि मार्ग की ससंस्थापना सिद्ध की और हमें उत्तम जीवन का मार्गदर्शन दिया 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" व्रज " लीला भूमि

" व्रज " प्रेम रज

" व्रज " प्रीत रंग

" व्रज " सखा संग

" व्रज " सखी अंग

" व्रज " गोप समर्पण

" व्रज " गोपि जन्म

" व्रज " भक्त सेवा

" व्रज " भक्ति तपस्या

" व्रज " प्रेम अवतार

" व्रज " श्री यमुना

" व्रज " श्री गोवर्धन

" व्रज " सूर्य धर्म

" व्रज " चंद्र रास

" व्रज " रसो वै से:

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

प्रेम 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक बार एक भक्त ने पुष्टि मार्गीय हवेली में दर्शन करते करते श्री प्रभु को दंडवत प्रणाम करते करते " जय श्री कृष्ण " की गूंज लगाई 🌷🙏🌷

हवेली में अपने आप चारों ओर से " जय श्री कृष्ण " के घंटारव उठने लगे 🌷

जो जो भी हवेली में थे वह सब सहसा हवेली के कमल चोक में आ कर आश्चर्यचकित होने लगे यह कैसा रव - गूंज और सूर 🙏

हवेली के मुख्याजी और हवेली के अधिकारी और कर्मचारी सब भीतरिया अचंभित हो कर आचार्य श्री के पास दौड़ पड़े 🙏

आचार्य भी यही सोच और विचारों में लीन हो गये 🙏

उन्होंने सब को साथ लेकर जहां से यह गूंज उठी थी वह स्थानक पर एक साधारण व्यक्ति अपनी दंडवत प्रणाम सेवा में डूबा हुआ था।

जैसे आचार्य जी ने वह व्यक्ति को स्पर्श किया तो हवेली के अंतपूर से मधुर लय की धून " श्री कृष्ण: शरणं मम " की सुनाई दी 🙏

आचार्य जी ने वह व्यक्ति को नमन करते कहा - हे परम भगवदीय वैष्णव! तुमने यह कैसी ज्योत जगाई है जो सारी हवेली गा रही है - श्री कृष्ण: शरणं मम।

उठो और कुछ अनुभूति का स्पर्श हमें भी कराओं 🙏

वह वैष्णव ने आचार्य जी के चरण स्पर्श करके कहा - हे आचार्यवर! आज मैं अपने आप से इतना व्यथित था की मैं अपने श्री प्रभु को " जय श्री कृष्ण " के अलौकिक नाम स्मरण से पुकार न सकु ऐसी संकोचता यह समाज में बिखरी है, उसे आज मैं श्री प्रभु को पुकार कर मुझमें क्या क्या दोष लगता है वह अनुभव कर सकु 🙏

जैसे मैंने दंडवत प्रणाम करते करते " जय श्री कृष्ण " की गूंज लगाई और सर्व दिशा से " श्री कृष्ण: शरणं मम " का सूर उठा 🙏

मैं श्री प्रभु में डूब गया 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरे दर पर आया हूं

तेरे मन में आया हूं

तेरी नज़र में आया हूं

तेरे अधर पर आया हूं

यूं ही आते आते तेरे स्मरण में आया हूं

यूं ही आते आते तेरे पास में आया हूं

पास पास से तेरे दिल में आया हूं

दिल दिल से प्रेम में छाया हूं

मिलन विरह की धूप छांव में तेरे दर पे आया हूं

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

हे राधा! तेरे सामने आया हूं

हे राधा! तेरे दरश में आया हूं

दरश दरश से तेरी राह में आया हूं

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

गोवर्धन जाता हूं

कुछ छूता है

विश्राम घाट जाता हूं

कुछ चिपकता है

वृंदावन जाता हूं

कुछ मचलता है

नंदगांव जाता हूं

कुछ खेलता है

बरसाना जाता हूं

कुछ बसता है

यही है व्रज की लीला 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "
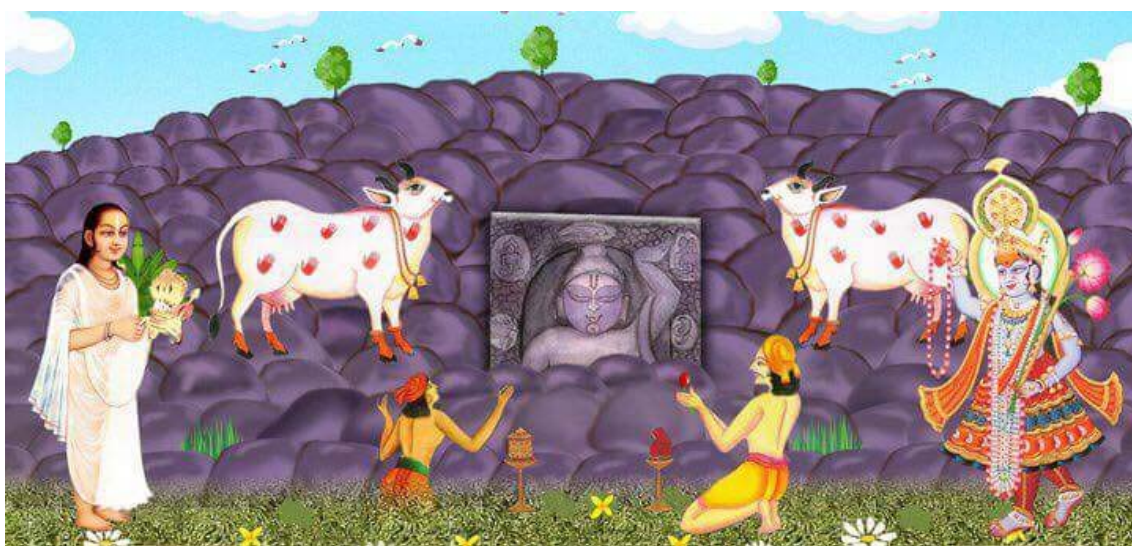
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मुझे मिला यह मनुष्य शरीर 🌷🙏🌷

अदभुत! मैं क्या कर नहीं सकता हूं?

मेरी नज़र जहां तक पहुंचे

मेरा मन जो तय करे

मेरा आत्म जो उजागर करे

मेरा ब्रह्म जो निर्णय करे

मैं कुछ भी कर सकता हूं

अकेला भी साथ साथ भी

यही सत्य है 🌷🙏🌷

यही परमेश्वर है 🌷🙏🌷

यही अवतार है 🌷🙏🌷

यही जन्म है 🌷🙏🌷

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मंगला श्री नाथजी

शृंगार श्री द्वारकाधीश

ग्वाल श्री नवनीत प्रिया

राजभोग श्री जगन्नाथ जी

उत्थापन श्री मथुरा नाथ जी

भोग श्री गोकुल चंद्रमा जी

संध्या आरती श्री मदनमोहन जी

शयन श्री गोवर्धन नाथजी

श्री वल्लभ कानी

श्री यमुना कानी

श्री गोवर्धन कानी

श्री विठ्ठल कानी

श्री गोकुल कानी

श्री हरिराय कानी

श्री अष्टसखा कानी

श्री ८४ वैष्णव कानी

श्री २५२ वैष्णव कानी

पुष्टि मूलत्व पुष्टि सुतत्व

पुष्टि शरणत्व पुष्टि कतृत्व

पुष्टि सेवत्व पुष्टि जीवत्व

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं सुबह उठता हूं

आज यह करना है यहां जाना है

ऐसा करना है ऐसा करवाना है

ऐसा होगा वैसा होगा

ऐसा ऐसा और ऐसा

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हे मेरे मित्र! 🌷🙏🌷

नहीं ऐसा ऐसा और ऐसा

प्रथम श्री प्रभु स्मरण🙏

द्वीतिय श्री मातापिता वंदन🙏

तृतीय श्री पति पत्नी प्रीति🙏

चतुर्थ श्री भाई बहन विजयी🙏

पंचम श्री पुत्र पुत्री वात्सल्य🌷

षष्ठ श्री गृह भूमि प्रणाम🙏

सप्तम श्री सूर्य नमस्कार🙏

अष्टम श्री जगत वंदन🙏

यही से हमारा सवेरा

यही ही हमारा बसेरा

यही से हमारा सीतारा

यही ही हमारा सहारा

यही से हमारा जीवन

यही ही हमारा तर्पण

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

प्यार में खो जाना

प्यार में डूब जाना

प्यार में गुल जाना

प्यार में एक होना

प्यार में समा जाना

सच! प्यार में ऐसा हो जाना

जैसे नीर

जैसे फूल

जैसे रंग

जैसे ज्योत

जैसे महक

जैसे सांस

जैसे दिल

जैसे आत्मा

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक पराकाष्ठा

एक अक्षर

एक नज़र

एक ख्याल

एक स्पर्श

एक याद

एक महक

एक सांस

हम

हम समर्पित

हम कुर्बान

हम उनके

बस हम नहीं

हम वो

हम कान्हा के

कान्हा कान्हा कान्हा

केवल कान्हा

" राधा " 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" चरित्र "

सच हम सांस लेते है - चरित्र के साथ

सच हम जीते है - चरित्र के हाथ

सच हम धर्म अपनाते है - चरित्र के पाथ

सच हम सत्य स्वीकारते है - स्व समझ के जात

सच हम प्रेम करते है - स्व उर्मि के जाग

सोचना - हम जीवन जीते है? या टटोलते टटोलते कहीं खोते रहते है?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
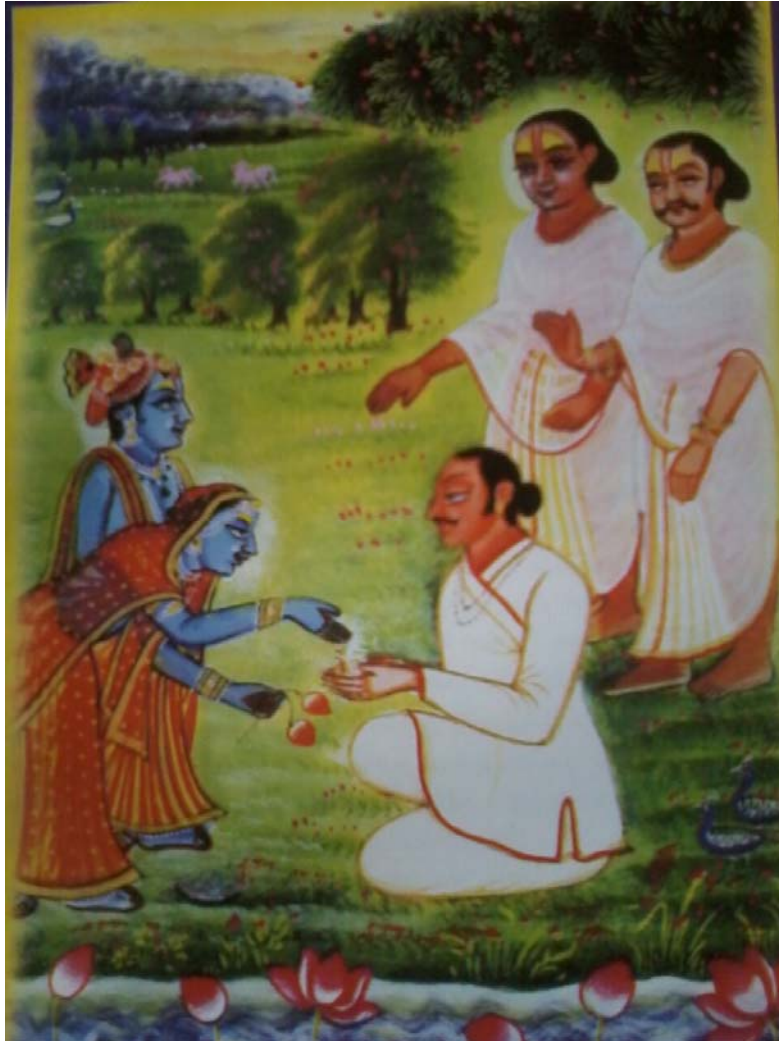
माधव माधव माधव माधव
माधव माधव माधव माधव
माधव माधव माधव माधव
ओहहह! माधव माधव रटते रटते
माधव आंगन पधारा 🙏

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण
ओहहह! कृष्ण कृष्ण रटते रटते
कृष्ण आंगन पधारा 🙏

यह कैसा संजोग
यह कैसा संयोग
हे माता! तुझे बार बार प्रणाम 🙏
तुने क्या छोटा सा नन्हा सा
नाम दिया है
कृष्ण कृष्ण कृष्ण
और हमने अपनी अंदर उतार दिया
कृष्ण कृष्ण कृष्ण
हमारे आंगन पधारे तीन माधव 🙏
आओ माधव हमारे ही नैनवा 🙏
आओ माधव हमारे ही मनवा 🙏
आओ माधव हमारे ही तनवा 🙏
नैनों से सदा दर्शन पायें
मन से सदा स्थिरता पायें
तन से सदा पवित्रता पायें
हे आओ माधव! हमारे आंगन
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे तपस्वी आत्मा! जीवन साथी स्वरूप 🙏

यह मनुष्य जीव जगत में हम पधारे और हमें जो अपना हाथ दिया, साथ दिया, पुरुषार्थ दिया, प्रेम दिया, अपने आपको समर्पण किया - तन, मन, धन और जीवन से आपको शत् शत् नमन 🙏

विचार, अक्षर, धर्म और कर्म की हर उपासना में हम साथ साथ जुड़े, अनेकों धागों से हम बंधे, बंधते बंधते एक हुए और जीवन सागर पार करने लगें। अनेकों सुख की घड़ी, मुसीबतों की क्षणे, तकलीफों की बौछारों, सामाजिक आंधियों और कौटुंबिक तूफानों में एक अडग योद्धा और आत्म ज्योत प्रज्वलित रख कर जो परमानंद जीवन महकाया 🌷

तुम्हें प्रणाम प्रणाम और प्रणाम

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
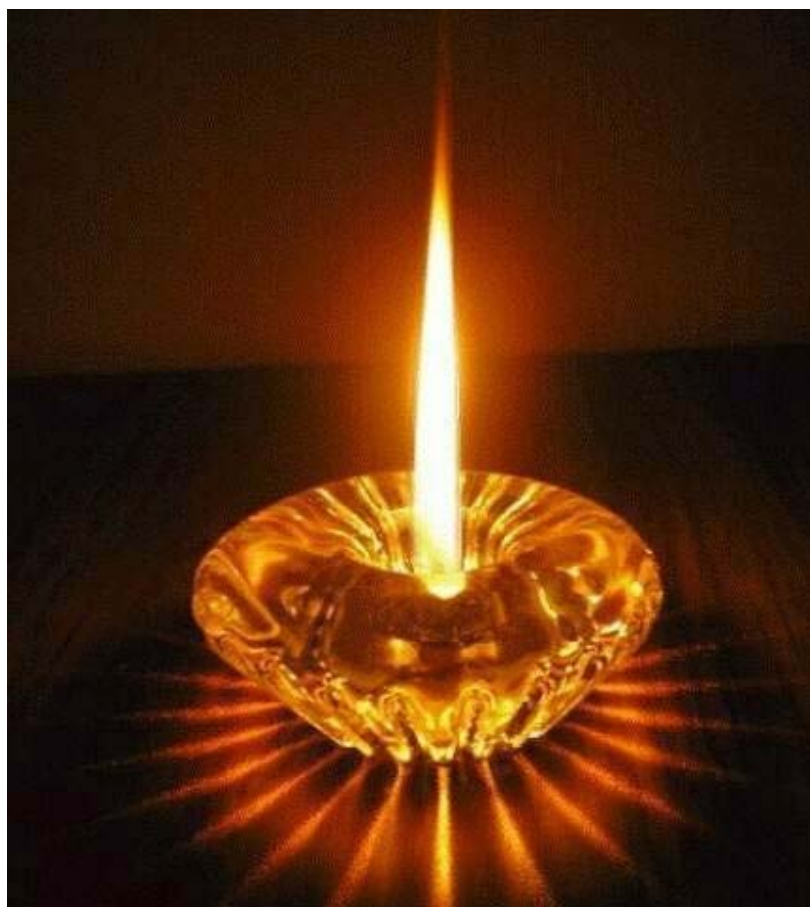
मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर सांस उच्छवास में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर बूंद बूंद में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर लहर लहर में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर रज रज में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर अवकाश में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर ज्योत में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर विचार विमर्श में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर ख़्याल सवाल में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर रंग बिरंग में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर वन उपवन में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर पत्ते पत्ते में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर सूर राग में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर गीत संगीत में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर महक सुंगध में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर नज़र नज़र में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर कदम कदम में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर संग अंग में

मैं ढूंढता हूं तुम्हें हर प्रीत प्रेम में

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितना अदभुत यह जगत है 👍

जन्म धरते ही माता पिता के साथ

भाई बहन के साथ

दादा दादी के साथ

कहीं कुटुंबी के साथ

बड़े हुए तो मित्रों के साथ

संबंधी के साथ

पड़ोसी के साथ

नजदीकिओं के साथ

युवा हुए तो प्रकृति के साथ

सृष्टि के साथ

पशुओं के साथ

पंखीओं के साथ

स्नातक हुए तो शिक्षा के साथ

विज्ञान के साथ

व्यवहार के साथ

समाज के साथ

वैष्वीक हुए तो संस्था के साथ

अनुशासन के साथ

अनेकों विषयों के साथ

अनेकों निष्णातो के साथ

विवाहित हुए तो पत्नी के साथ

अनेकों व्यक्तिगतो के साथ

पुत्र के साथ

पुत्री के साथ

वयस्क हुए तो जगत के साथ

धर्म के साथ

आध्यात्म के साथ

सेवा के साथ

बुजुर्ग हुए तो पोते पोति के साथ

पुस्तक के साथ

धर्म स्थानों के साथ

यात्रा के साथ

आखरी पड़ाव पर पहुंचे तो एकांत के साथ

तपस्या के साथ

अनुभव के साथ

अंतिम सांस तो आत्मा के साथ

ब्रह्मांड के साथ

ब्रह्म के साथ

परमात्मा के साथ

साथ साथ साथ साथ साथ साथ

" गजब " अजब " सहज "

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नाथ द्वारे

नाथ दर्शने नाथ शरणे नाथ स्मरणे

डग डग भरे डग डग धरे डग डग चरणे

नजर नजर नाथ स्वर स्वर नाथ डगर डगर नाथ

जप जप नाथ भज भज नाथ रज रज नाथ

नाथ द्वारे

सांस सांस नाथ नयन नयन नाथ गूंज गूंज नाथ

हर हर नाथ नर नर नाथ चर चर नाथ

नाध द्वारे

नमन नमन नाथ वंदन वंदन नाथ प्रणाम प्रणाम नाथ

दंडवत दंडवत नाथ व्यक्त व्यक्त नाथ भक्त भक्त नाथ

नाथ द्वारे

संग संग नाथ रंग रंग नाथ सत्संग सत्संग नाथ

जग जग नाथ ब्रह्म ब्रह्म नाथ आतम आतम नाथ

नाथ द्वारे

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हमारी संस्कृति कितनी अलौकिक है
हमारे संस्कार कितने सर्वोत्तम है
हमारा आध्यात्मिक कितना सत्य है
की हम जन्म - जीव और जीवन से पुरुषोत्तमता पा सकते हैं
हमारा आकाश
हमारी धरती
हमारा सूर्य
हमारा चंद्र
हमारा वायु
हमारा सागर
हमारी प्रकृति
हमारी द्रष्टि
हमारी सृष्टि
हमारी पुष्टि
हमारा ज्ञान
हमारा विज्ञान
हमारा ध्यान
हमारा पान
हमारा अन्न
हमारा धन
हमारा धर्म
हमारा जन्म
हमारा जीवन
हमारा पण
हमारा वर्ण
हमारा स्पंदन
हमारा तन
हमारा मन
ओहह! हर घड़ी - सांस - स्वर - विचार - ख्याल - स्पंदन - क्रिया योग्य योग्य तो हम सर्वोत्तम - परमोत्तम - पुरुषोत्तम 🌷🙏🌷
अद्भुत - अखंड - अद्वैत
" Vibrant Pushti"
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हरिराय से हरि दास जगाये

जन जन पुष्टि प्यास जगाये

पद पद जीवन सिद्धांत खिलाये

पुष्टि संस्कार हर मन मन जगाये

एक चरित्र पुष्टि संस्कार जगाये

भव भव के सारे बंधन छुडाये

हरिराय हरि चित्त गुन बताये

पुष्टि पुष्टि से सारा जीवन महकाये

हे हरिराय जी! आपको दंडवत प्रणाम 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हरि के हरि दर्शन आज

भाव प्रीति से कीर्तन आज

पद पद पुष्टि उड़े रंग आज

गृहे गृहे बिराजें हरिराय आज

भक्ति संगति चरण स्पर्श गति

अंतर अंतर हरिरायजी संग जागे आज

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

धन चाहिए

धान्य चाहिए

सुख चाहिए

समृद्धि चाहिए

दौलत चाहिए

मिलकत चाहिए

रुप चाहिए

जरझवेरात चाहिए

नाम चाहिए

रुआब चाहिए

रुतबा चाहिए

विद्या चाहिए

ऐसों आराम चाहिए

संपत्ति चाहिए

आदान प्रदान चाहिए

मान मरतबा चाहिए

वंश वेला चाहिए

अंग उपांग चाहिए

राज रत्न चाहिए

सत्ता चाहिए

सन्मान चाहिए

राग रागिनी चाहिए

गीत संगीत चाहिए

जल कपट चाहिए

रक्षा सुरक्षा चाहिए

भव्यता चाहिए

ओहहह क्या क्या चाहिए!

कभी यह सोचा मुझे निखालसता चाहिए

कभी यह सोचा मुझे प्रेम चाहिए

कभी यह सोचा मुझे निश्चलता चाहिए

कभी यह सोचा मुझे निष्ठा चाहिए

कभी यह सोचा मुझे विश्वास चाहिए

कभी यह सोचा मुझे पवित्रता चाहिए

कभी यह सोचा मुझे धार्मिकता चाहिए

कभी यह सोचा मुझे प्रमाणिकता चाहिए

कभी यह सोचा मुझे नि:संशय चाहिए

कभी यह सोचा मुझे शिष्टाचार चाहिए

कभी यह सोचा मुझे सत्यता चाहिए

कभी यह सोचा मुझे दीनता चाहिए

नहीं नहीं और नहीं

बचपन से लेना लेना और लेना

ऐसा क्यूं?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं एक प्रश्न आप सभी को पूछता हूं
क्या आप जो अमरीका, ओस्ट्रेलिया, इंग्लैंड आदि पश्चिमी देशों में जाते हो - रहते हो
आपने वहां कभी कलयुग की अनुभूति पायी?
और हमारे भारत देश में हर कोई घडी घडी कलयुग का अनुभव करते हैं। 🙏
ऐसा क्यूं?
मुझे माफ़ करना यह प्रश्न से 🙏
पर हकीकत कह रहा हूं
हमने शास्त्र पढ़ें
हमने कथा सुनी
हमने विचार विमर्श किया
हमने वादविवाद किते
हमने कहींओ से सुना
हां! कलियुग है - हम कलियुग के जीव है
कलियुग अर्थात दोषों युक्त जीवन
कलियुग अर्थात निम्नकक्षित जीवन
आदि आदि आदि 🙏
क्या हम यह जीवन परिवर्तित कर सकते है?
क्या हम यह जीवन बदल सकते है?
हां! अवश्य
पर शास्त्र कहता है - यह कुछ अवधि तक है बाद में बदलेगा
हम कितने अंधविश्वासी है
हम कितने मान्यता भरे हैं
हे भारत के तत्वचिंतक व्यक्ति!
यह युग हम परिवर्तित कर सकते हैं
यह युग हम अवश्य बदल सकते है
हिम्मत और सत्यता को अपना कर हमें कदम कदम बढ़ाना है। हमें स्व व्यवस्था और हर व्यवहार ऐसे चढ़ना है जो सबकुछ मेरा ही निरपेक्षता से लुटाना है।
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" तत्काल दु:ख निवृत्ति " गहराई से सोचना है

मनुष्य का आज का अर्थ है - तत्काल दु:ख निवृत्ति।

आज के मनुष्य का मन - तत्काल दु:ख निवृत्ति

आज के मनुष्य का कर्म - तत्काल दु:ख निवृत्ति

आज के मनुष्य का तन - तत्काल दु:ख निवृत्ति

आज के मनुष्य का धन - तत्काल दु:ख निवृत्ति

आज के मनुष्य का जीवन - तत्काल दु:ख निवृत्ति

जहां देखो - जहां सुनो - जहां पहुंचो - बस एक ही बात - तत्काल दु:ख निवृत्ति 🙏

है ने अचरज भरा - हर मनुष्य की यही ही चाह

" तत्काल दु:ख निवृत्ति "

बस इसमें ही जीना - इसमें ही मरना

" तत्काल दु:ख निवृत्ति "

मैं आपको विनंती करता हूं - कहें कोई उपाय

मैं आपको विनंती करता हूं - करें कोई मार्ग

मैं आपको विनंती करता हूं - करें कोई सुझाव

इसलिए तो तुरंत - कोई व्रत, कोई अनुष्ठान, कोई बाधा, कोई धागा, कोई वादा, कोई बाधा, कोई उपवास, कोई आवास, कोई तापस, कोई साधना, कोई उपासना, कोई नियम, कोई संयम, कोई वयम, कोई आयाम।

🌷🙏🌷 सच हम कितने अंधविश्वासी है, क्षणभंगुर है, अधैर्य है, अप्रमेयी है, अधूरे हैं।

" तत्काल दु:ख निवृत्ति " है कोई साधन अवश्य जो तुरंत निवृत करें 🙏

आप अपने अनुभव से बताओ 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" आंसू "

हम क्या समझते है यह आंसू को!

हम जैसे जैसे समझदार होते बड़े होते जा रहे हैं

बड़े अर्थात उम्र और अनुभव से हम हमारा जीवन संवरते और पसारते जाते है।

यह आंसू कहीं ओ को देखते हैं, समझने की कोशिश करते हैं। पर जब हमारें खुद आंसू बहते हैं तब कुछ तो पता चलता है - यह आंसू क्या है?

सच कहें! यह आंसू हमारा प्रमाण है, हम क्या है और कौन है?

कौन ऐसा है जिसने आंसू नहीं बहारें!

धैर्य से समझना

भगवान बुद्‌ध ने आंसू बहाते

भगवान महावीर ने आंसू बहाते

भगवान राम ने आंसू बहाते

भगवान कृष्ण ने आंसू बहाते

भगवान शंकर ने आंसू बहाते

कितनी गहराई है हमारी सत्यता और पवित्रता की यह आंसू में 🙏

मेरे मित्रों! जीवन की सच्चाई स्वीकारी है तो हमें अवश्य जागना है। हम तो अति सर्वोच्च और सर्वोत्तम जीव और देहधारी है।

हम को क्या मिटायें जमाना जो जमाना हमसे है।

हमें जमाना संवारना है - संभालना है।

हम ही ऐसे सामर्थ्यवान है जो हर कुछ कर सकते है।

हमसे ही वेद है - धर्म है - सुख है - आनंद है।

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

यह आंसू मेरे मेरा आत्मा है - मेरा परमात्मा है

यह आंसू मेरा प्रेम है - मेरी सत्यता है

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जींदा है तो मृत्यु अवश्य है

जैसे जन्म हमारा अनायास से कोई भी योनि - कोई भी कुटुंब - कोई भी देश में होता है।

हमारी कहीं मान्यताएं - हमारे कहीं गणित - हमारी कहीं श्रद्धा और हमारा कहीं कर्म फल हमें सूचक करती है - हमारा यह जन्म है।

हम कहीं जीवन चरित्र - कहीं कर्म प्रमाण से धारणा धरते है कि यह ऐसा हो सकता है - और यह अटकलें होती रहती है।

यह सभी के पिछे संभावित कारण जीवन की सच्चाई को हम नाप सके। हम कोई जीवनशैली रच सके। अति गहराई से अध्ययन करें तो यह गणित बिलकुल सही और आवश्यक है।

यह गणित सबको अपनाना चाहिए - स्वीकार करना चाहिए।

पता नहीं हम ऐसी कैसी धारा में जीते हैं और जीते रहते है की हम यह गणित भूल गए - स्वीकार नहीं किये - या हम इतने कार्यरत है जो हम यह योग्य जीवन सिंचित संस्कृत को छोड़कर जो जीये जैसा जीये स्वीकार कर समाप्त कर दिया।

आज यही सोच से हम जींदा है और रहते है - साथ साथ हमारे वारसाई जीवन को यही रीत से जींदा करते रहते है।

इसलिए ही आज मानव समाज में बिन संस्कारीक खाईएं बढ़ती जा रही है। आज हर कुटुंब समस्याओं से भरपूर है - न कोई मार्ग - न कोई सुझाव - न कोई संकेत समझ रहे हैं।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एकादशी की सच्चाई न्यारी

हर कोई करे चतुराई

संसार जीवन की शैली भारी

एकादशी से जगाये सेवा सारी

प्रभु स्मरण पाठ सत्संग विचारी

भजन गाये कीर्तन बाजे तिहारी

उमड उमड कर रास रचे नारी

हवेली बैठक दर्शन दौडे चित्त हारी

मनडु उमंगे प्रभु संग रंगे दुलारी

ग्यारह ग्यारह भोग धराये सामग्री भारी

घर घर बुलाये वैष्णव मंडल धून धरे निराली

सितारों संग छेडे मल्हार रागिनी

प्रियतम विरह की पुरे प्यास बावरी

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
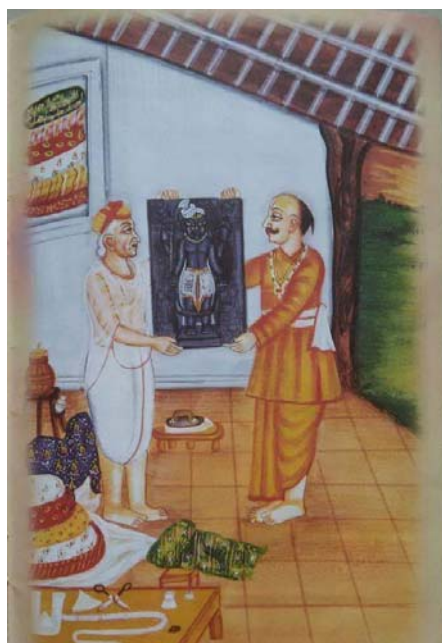
धरोहर हमारी सदा खुशी और संतोष लुटाती है।

तवंगर ऐसे हैं की धन को निर्धन समझे

एक हो कर जीये वही ही आनंद धन

जमीन नहीं दौलत नहीं माल मिलकत नहीं

केवल विश्वास संस्कार और भाईचारा

यही ही हमारी धरोहर

अनेकों ने धन से लुटा

अनेकों ने तन से लुटा

अनेकों ने मन से लुटा

अनेकों ने जीवन से लुटा

अवश्य हम लुटाने ही है

प्रेम को लुटाना

उर्मि को लुटाना

आनंद को लुटाना

है ऐसी धरोहर जो प्रेम के धागों से आत्माएं बांधते है

है हमारे देश की यही संस्कृति

जो प्रेम से तवंगर

जो उल्फत से तवंगर

जो प्रीत से तवंगर

जो इश्क से तवंगर

न कल की चिंता न कोई की चिंता

केवल प्रेम ही सबकुछ

यही जीवन की सही धरोहर

ऐसे हैं हम ऐसा है हमारा देश

कोई अशिक्षित समझे

कोई असुरक्षित समझे

सदा करें प्रेम की सुरक्षा

कितनी ऊंची धरोहर

मन से तवंगर

चित्त से तवंगर

आत्म से तवंगर

बस यही ही मूल धरोहर

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "
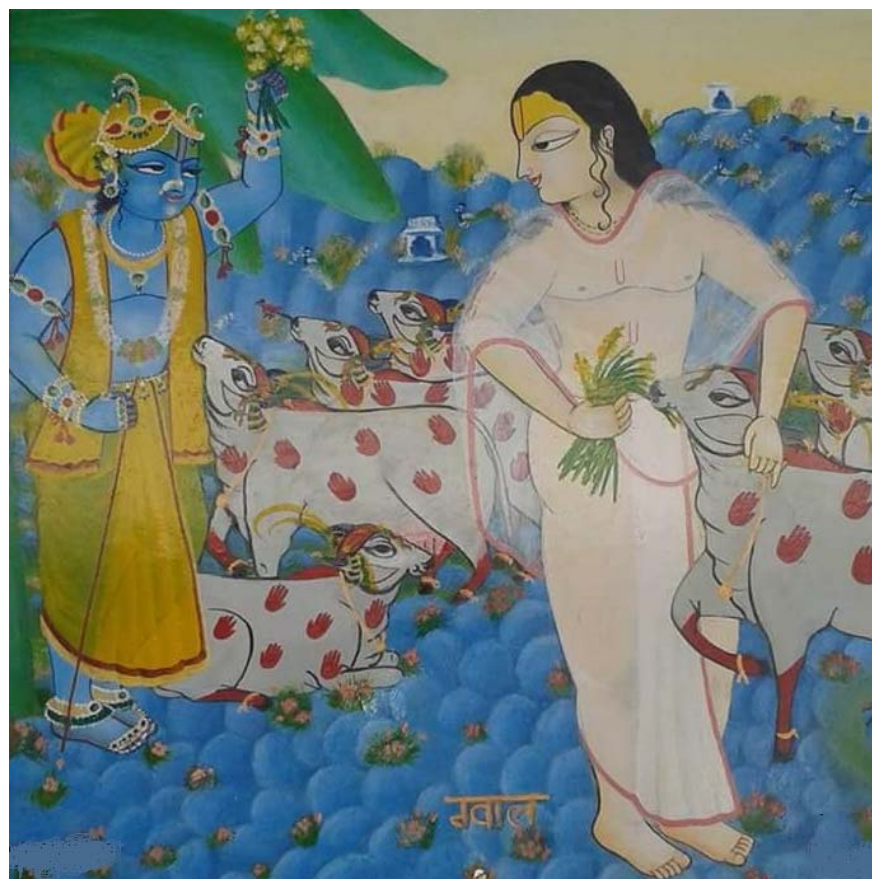
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" मुरली मनोहर मोहन गिरिधर आश न तोड़ो

दु:ख भंजन मोरा साथ न छोड़ो "

हे गोपाल! हे वल्लभ! तुम ही मेरे पालनहार! तुम्ही का हूं मैं आधार।

बस तेरी ही प्रेरणा! 🌷🙏🌷

सदा तुममें समर्पण 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

क्या हम सोच सकते है अकेले रहे?
क्या हम समझ सकते है अकेले रहे?
क्या हम सोच सकते है अकेले है?
यह धरती - नहीं अकेली
यह आसमां - नहीं अकेला
यह सागर - नहीं अकेला
यह वायु - नहीं अकेला
यह सूरज - नहीं अकेला
यह वनस्पति - नहीं अकेली
यह प्रकृति - नहीं अकेली
यह सृष्टि - नहीं अकेली
यह जगत - नहीं अकेला
यह पशु - नहीं अकेले
यह पंखी - नहीं अकेले
यह कीटक - नहीं अकेले
तो यह मानव कैसे अकेला?
कुटुंब साथ
समाज साथ
संसार साथ
धर्म साथ
कर्म साथ
तो कैसे हम अकेले?
हे आत्मा! तु परमात्मा के साथ
हे मन! तु जीवन के संग
हे तन! तु प्रकृति के संग
हे धन! तु पुरुषार्थ के संग
तो तु मुक्त कैसा?
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
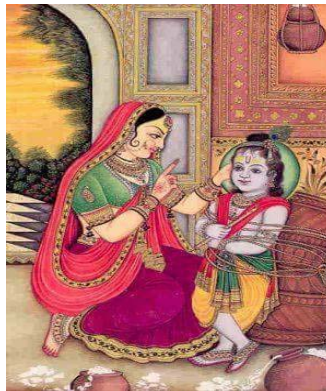
गहराई से और धैर्य से समझना 🙏

रात दिन सदा आज्ञानुसार जीते हैं।

क्षण क्षण सदा श्री ब्रह्मसंबंध मंत्र स्मरण करते रहते हैं।

निश दिन सदा शिक्षानुसार सेवा में रत रहते हैं।

संस्कार और संस्कृति दिशानिर्देश पुरुषार्थ करते हैं।

जो प्रमाणिकता से निर्वाह पार्जते है वही योग्यता पूर्वक उपभोग करते हैं।

दान - अनुष्ठान - मनोरथ - भेंट चरण शरण धरते है।

न कोई अपेक्षा - न कोई तितिक्षा - न कोई मुमुक्षा सोचते हैं।

काल पूजन - भाग्य विमोचन - नसीब सर्जन करते हैं।

तो संयोग विकट क्यूं?

तो परिस्थिति निष्कृत क्यूं?

तो समय अस्वस्थ क्यूं?

तो प्रकृति प्रकोपी क्यूं?

तो काल विमुख क्यूं?

तो समय विपरीत क्यूं?

तो भाग्य फूटा क्यूं?

तो नसीब लुटा क्यूं?

अनेकों गत जन्मों के फल!

भाग्य विधाता ने यही लिखा है।

नसीब को यही स्वीकारना है।

यही ही मेरी कर्म कहानी है।

एकांत में सोचें

अपने चरित्र को पूछे - भाग्य और नसीब से

शिक्षात्मक से सोचें

सलामती से सोचें

रक्षात्मक से सोचें

धर्म नियमन से पूछे

तुलनात्मकता से सोचें

अध्यात्मकता से सोचें

गुणात्मकता से सोचें

ओहहह! न कुछ पाया - न कुछ आया - न कुछ धारा

तो मैं ऐसा क्यूं?

तो मेरा जीवन ऐसा क्यूं?

तो मेरी गति ऐसी क्यूं?

तो मेरी कक्षा ऐसी क्यूं?

क्यूं - क्यूं - क्यूं

सोच कर योग्य सुनो

सोच कर योग्य समझो

सोच कर योग्य कहो

सोच कर योग्य विचार विमर्शों करें

सोच कर योग्य चिंतन करें

सोच कर योग्य स्वीकार करें

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

क्या करते हैं हम?
क्या कर रहे हैं हम?
कोई मिलने आया
सोचेंगे - उन्हें मेरी जरूरत पड़ी
कोई बताने आया
सोचेंगे - उन्हें मेरे सीवा कोई नहीं मिलता
कोई विनंती करें
सोचेंगे - मैं ही उनका मददगार हूं
कोई जगाने आया
सोचेंगे - अपने आपको बहोत होशियार समझता है
कोई देने आया
सोचेंगे - मुझ पर बहोत भरोसा है
कोई लेने आया
सोचेंगे - मैं ही उन्हें पालता हूं
कोई सलाह मांगने आया
सोचेंगे - मुझे मानता है
कोई भूल जाते
सोचेंगे - अपना काम बन गया फिर कौन?
कोई याद आया
सोचेंगे - मुझे बनाके गया
कोई झगड़ा किया
सोचेंगे - मेरे पिछे पड़ा है
सच हम कितने गीरे हूए है?
धैर्य से
परिस्थिति से
अनुभव से
उन्हें समझो 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" नवरात्रि "

माताजी का पूजन अर्चन और आराधना 🌷🙏🌷

हमारी संस्कृति आधारित प्राथमिक मातृस्वरुप " श्री गायत्री माता "

हमारे हर आध्यात्मिक शास्त्रों में " श्री गायत्री माताजी " का प्रथम पूजन है 🙏

क्यूंकि हमारी संस्कृति का प्रसव " श्री गायत्री माताजी " से है।🌷🙏🌷

प्रथम दिन - श्री गायत्री माताजी अनुष्ठान "

अनेकों अर्थ न करते हुए - यह हमारी मूल धरोहर है। " श्री गायत्री माताजी " से ही प्रारंभ - आरंभ और आगमन।

हमारी गौत्र - श्री गायत्री माताजी

हमारा स्त्रोत - श्री गायत्री माताजी

हमारी ज्योति - श्री गायत्री माताजी

प्राथमिक पूजन अर्चन - श्री गायत्री माताजी 🌷🙏🌷

" ॐ भूर्भुवः स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं।

भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात् "

सर्वे सांस्कृतिक वेदोंपनिसदों प्रमाणित और धर्मस्वीकृत जीवों को मूल तत्वों से अभिनंदन व्यक्त और सदा संस्कृति के संरक्षक हो ऐसी विनंती करता हूं 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" तापत्रय विनाशाय "

कितना अदभुत सूत्र है श्री मद्भागवत का - जो आरंभ में ही हमें जीवन का उत्तम ज्ञान और सिद्धांत का स्पर्श करवा दे - मार्ग बता दे - दिशा दिखा दे - फल दे दे।

हमारी संस्कृति भूत, वर्तमान और भविष्य समय समय पर जागृत करती है।

तापत्रय - अर्थात तिन प्रकारों के ताप - यह ताप हमें बहोत कुछ सीखाता है - समझाता है - सही दिशा निर्देश करता है। पर हम यही तापों में हम सदा अपने आपको नष्ट कर देते है।

यह ताप है - आधि - व्याधि और उपाधि।

हमारा जन्म, जीवन, धर्म, कर्म इनसे जुड़ा है। हमारी कृति, वृत्ति और प्रकृति इनसे है।

हां! अगर यह तिनों तापों से बचना है, सुरक्षित रहना है - तो वीर हो जायेंगे - संत हो जायेंगे - भक्त हो जायेंगे - प्रिय हो जायेंगे।

आधि - व्याधि और उपाधि 🌷🙏🌷

क्रमशः

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं जा रहा था कहीं

नज़र मिली एक व्यक्ति से

नज़र नज़र से प्रणाम किया

अधर पुकार उठा " जय श्री कृष्ण "

सामने से प्रत्युत्तर आया " जय श्री कृष्ण "

दो व्यक्ति एक मित्र हूए

मित्र मित्र से मित्रों भया एक मंडल

हर मित्र सदा साथ साथ रहे

करें पुष्टि सत्संग

ऐसे हैं जीवन कर्म धन

जीये एक एक पुष्टि जन जन

श्री वल्लभ पुष्टि कृपा करें

श्री यमुना पुष्टि सिंचन करें

श्री श्रीनाथजी पुष्टि रक्षा करें

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

जय श्री कृष्ण जय श्री कृष्ण

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" श्री प्रभु स्मरण "

हमें यह आदेश बार बार कहा

हमें यह आज्ञा बार बार कही

हमें यह सूचन बार बार किया

हमें यह जागृतता बार बार जगाया

हमें यह ज्ञान बार बार दिया

ऐसा क्यूं?

यह स्मरण से हमारे प्राकृत दोष नष्ट होते हैं।

यह स्मरण से हमारा अज्ञान ज्ञान में परिवर्तित होता है

यह स्मरण से हमारा भूला हुआ रुप हम पा सकते है

यह स्मरण से हमारा आत्मा परमात्मा हो सकता है

यह स्मरण से हमारा आनंद उभरता है

यह स्मरण से हम जीव से ब्रह्म होते है

यह स्मरण से हम भक्त से भगवान होते है

कितना अदभुत रहस्य 🌷🙏🌷👍

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

रावणो की बस्ती में राम कहां

राम राम की गूंज लगाये वो हनुमान कहां

यह तो ऐसी स्थिति है

धर्म धर्म के नाम पर लंका सजाये

खुद ही खुद को अपने आपसे जलाये

ऐसी बस्ती में प्रेम दीपक प्रकटाना

जो ज्योत से ज्योत जगाते

कभी कोई सीता हो जाये

कभी कोई लक्ष्मण हो जाये

कभी कोई शबरी हो जाये

कभी कोई तुलसीदास हो जाये

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
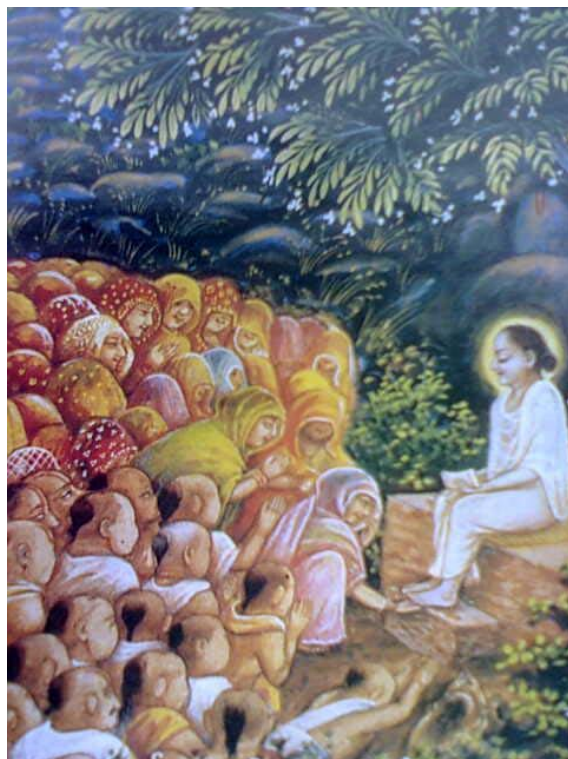
" स्मरण "

पल पल जो ख्यालों में है वही का हमें दर्शन होता है

क्षण क्षण जो यादों में है वही का हमें दर्शन होता है

घडी घडी जो विचारों में है वही का हमें दर्शन होता है

मन मन में वही उठे जो हमने मन में बसाये

नैन नैन में वही जागे जो हमने नैन में बसाये

होंठ होंठ पर वही स्वर उठे जो हमने अपने आपको जगाया

कार्य कार्य में वही फल पाये जो कर्म हमने जो रीति से किया

मित्र मित्र में वही मित्रता अनुभवे जो मित्रता निभाये

समय समय में हम वही संस्कार पाये जो हमने तन मन धन से अर्जित किया

जीवन जीवन में हम वही आनंद पाये जो आडंबर भरा न हो

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
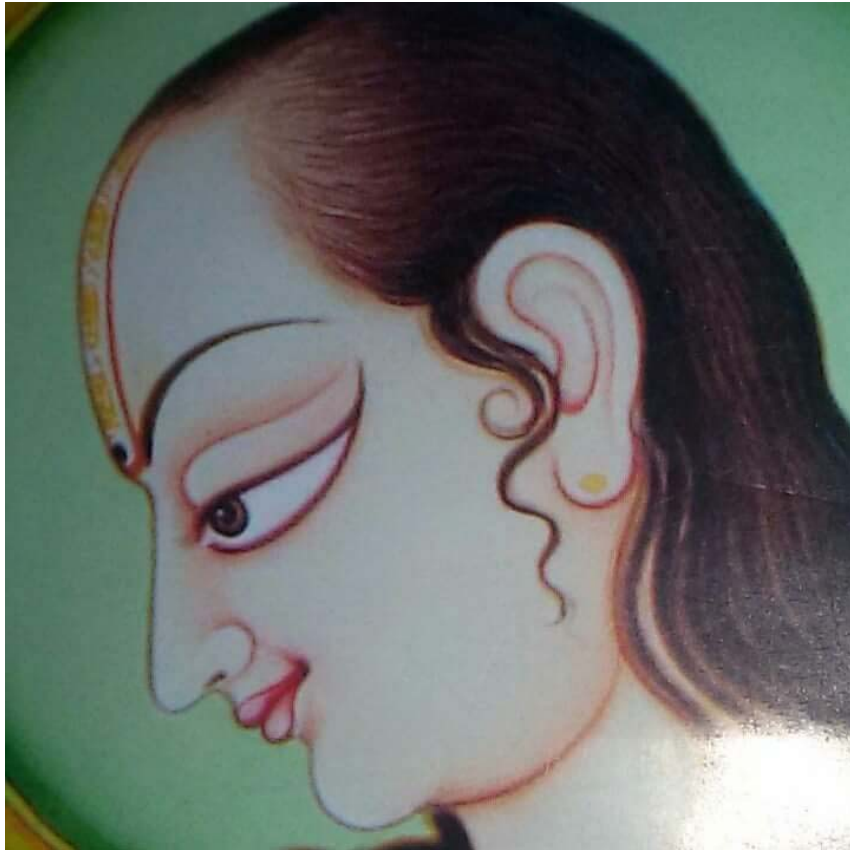
मुझे पता है

मैं हिन्दुस्तानी हूं - कहीं कुटुंब रीति रिवाजों - समाज रस्मों और धर्म परंपराओं में जीता हूं।

यहां अकेला अर्थात बिलकुल अकेला जीना होता है - चाहें कितने बंधनों से बंधे - कितने संबंधों से जुड़े - कितने संगठनों या संप्रदायों से एकजुट होने की कोशिश करें।

पर फिर भी अकेला। क्यूं?

मान्यता - श्रद्धा - जीवन शैली - वैचारिक धारा - अनेकों अर्थों भरी निर्णायकता।

ध्येय - लक्ष - संकल्प की दिशा - द्रष्टि - कार्य पद्धति न शिक्षण में और न जीवन जीने की शैली में हो। बस जीते हैं - जीते हैं - जीते हैं। 🙏

अकेला - अकेला - अकेला

क्रमशः

" Vibrant Pushti "
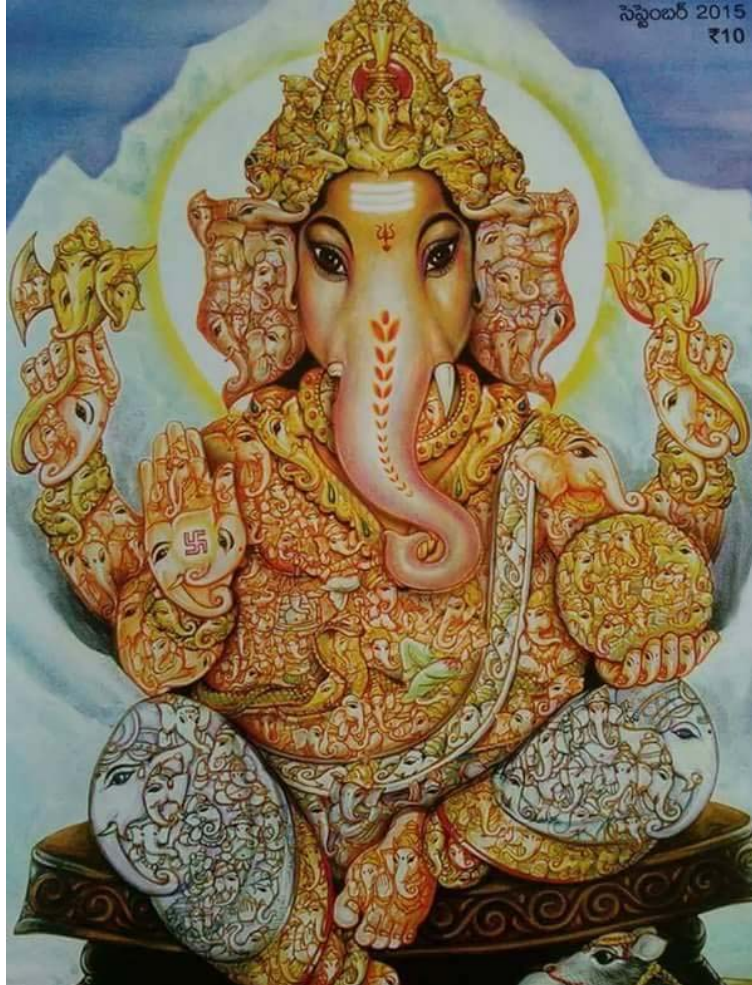
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आपने जो जीया

आपने जो कुछ किया

आपने जो कुछ पाया

आपने जो कुछ समझा

आपने जो कुछ दिया

आपने जो कुछ लिया

आपने जो कुछ लुटाया

आपने जो कुछ सीखा

आपने जो कुछ सीखाया

आपके मन से

आपके तन से

आपके धन से

आपके जीवन से

आपके धर्म से

आपके कर्म से

आपके मर्म से

आपके प्रेम से

आपकी करुणा से

आपका आपका आपका

आपका धन्यवाद 🌷🙏🌷

आपको नमन 🙏

आपको प्रणाम 🙏

आपको वंदन 🙏

आपकी जय जय हो 🌷🙏🌷

🌷🙏🌷🌷🙏🌷🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कहीं छोटी छोटी बातें हैं जो हमने अपने स्व अहंकार और आडंबर में ऐसे घुमा दिया है, जिससे मधुर जीवन को कलयुग कर दिया।

हम बातें करते रहते है। हम ऐसे हैं, हमारा कुटुंब ऐसा है, हमारा दोस्त ऐसा है, हमारे पहचान वाले ऐसे हैं, पर जब खुद को टटोलते हैं तब हम क्या होते हैं 🙏

जन्म से सीख सीख और सलाह सलाह।

जब स्व प्रयोगिक हो तब -

हर कोई अपने आपको महान समझे

हर कोई अपने आपको संस्कारी समझे

हर कोई अपने आपको तवंगर समझे

हर कोई अपने आपको धार्मिक समझे

हर कोई अपने आपको ज्ञानी समझे

तो कलयुग कहां?

हमारी मिट्टी सत्य संस्कृति की

हमारी नदियां विशुद्ध अमृत सिंघती

हमारी आबोहवा निरोगी

हमारा अन्न अन्नपूर्णा

हमारा शिक्षण सैद्धांतिक

हमारा जीवन उच्च शैली

ओहहह!

अवश्य आज प्रतिज्ञा करले

" मैं सत्य विश्वासु समहितेषी जीव "

भिष्म प्रतिज्ञा हैं सदा यह वचन का पालन करुंगा 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कदम कदम पर तेरा ही ताल

रमझट रमझट में तेरा ही उन्माद

मधुर मधुर स्वरों में तेरी ही गूंज

तरल तरल संगीत में तेरा ही राग

मैं ऐसे झुमु मैं ऐसे रमु

मेरे हाथों में सदा तेरा ही हाथ

रास रंग खेल में तेरा ही ध्यान

कान्हा तेरी ही अदा अंग अंग थाम

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरे जुल्फें ऐसे बिखेर दूं

आसमां काले घनघोर घटा हो जाये

श्याम भरे रंग में तेरा मुखडा खिला दूं

मेरी उज्जवल प्रीत में श्याम राधा हो जाये

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

छुपा छुपी खेले बादलों से

कभी घनघोर बादल

कभी उजियारा बादल

कभी बरसता बादल

कभी गरजता बादल

हे मेरे प्रियतम! तेरा यूं छुपछुपाना

मेरे मन को ललचाये

मेरे तन को तडपाये

मेरे दिल को विहराये

कभी तेरे नैन झांकु

कभी तेरा मुखडा झांकु

कभी तेरा जलवा झांकु

कभी तेरी हंसी झांकु

तेरे नैन से मेरे नैना उभराय

तेरे मुखड़े से मेरा मुखड़ा मलकाय

तेरे जलवे से मेरा दिल हरखाय

तेरी हंसी से मेरा प्रेम छलकाय

हे राधा! अखंड है हमरी प्रेम रवानी

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

अनेकों बार

बार बार

अनेकों अनेकों से सुना

कलयुग है - कलयुग है - कलयुग है

ध्यान से चिंतन करें - क्या हम कलयुग के जीव है?

यह कलयुग है क्या?

यह प्रश्नों इसलिए है की कलयुग और हम

हम स्व को समझ सके

और

हम कलयुग को समझ सके

ऐसा समय और ऐसे जीव को उत्तम होने के लिए यह चिंतन आवश्यक है। 🌷🙏🌷

हम अति तीव्र और जिज्ञासा से यह प्रश्नों और समय का चिंतन और अध्ययन करें तो हम कलयुग के जीव अवश्य है।

हमारा जन्म किस आधार पर हुआ?

हमारा स्वत होने तक किसने हमें उछेरा - पाला - पोशा - संस्कार शिक्षित किया वह संजोगो और सामायिक परिस्थिति में हम कैसे कैसे किस किस से जुड़े और हमने अपने आपको क्या कक्षित पर प्रस्थापित किया?

क्रमशः

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
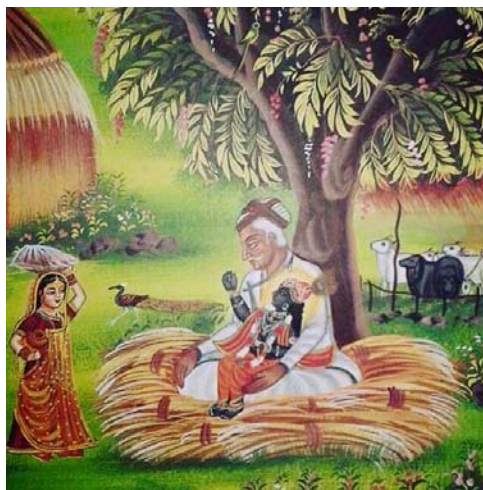
श्याम सलोनी यमुना
श्याम सलोनी यमुना
मेरे घर में आजा
मेरा पुष्टि प्रेम स्वीकार जा

तु मेरे मन में आना
मेरा शरण वरण अपनाना
मेरा सोलह श्रृंगार से सजना
मेरी चुनरी रंग बिरंगी ओढना
मेरी पुष्टि भक्ति में रंगना
मेरा मनोरथ पूरा करना

श्याम सलोनी यमुना
मेरा पुष्टि प्रेम स्वीकार जा

तु मेरे दिल में आना
मेरी प्रीत अमृत पीना
मेरे आनंद स्वराटानंद खेलना
मेरा अंग अंग लुट जाना
मेरा आत्म श्रीनाथ धरना
मेरा जीवन पार लगाना

श्याम सलोनी यमुना
श्याम सलोनी यमुना
तु मेरे घर पर आजा
मेरा पुष्टि प्रेम स्वीकार जा
श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी की जय
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जनम जनम जनम जनम

कहीं जीव शरीर पाये

आज जब जनम है

एक दिल बसे शरीर में

अवश्य यह तेरा प्यार ही है

अवश्य यह तेरा एकरार ही है

अवश्य यह तेरा ऐतबार ही है

अवश्य तेरा यह मंदिर है

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

એક વડીલ જે આપણા પિતા હોય અથવા માતા હોય અથવા માતાપિતા હોય
મંદિર છે જીવનનું
જેમાં તેઓના સિંચન હોય
જેમાં તેઓના અનુભવ હોય
જેમાં તેઓના છોરૂં છોરી હોય
જીવે આનંદે અનેરાં સ્વપ્નાં
જીવાડે પ્રેમે અનેરાં ઉમંગે
એવું જીવાડે જે કદી ના મળે
દોડતા દોડતા લાડ લડાવે
ભૂખ્યા ભૂખ્યા સ્નેહે જમાડે
એક કપડે એક લૂગડે સંસાર ચલાવે
બાળ ગોપાળ ને શૃંગાર સજાવે
એક એક એક શિક્ષા અપાવે
બેટા બેટા સદા રહે ખુશ
જીવે કાયમ ને એક જ આશ

આજે તેઓ માતા અને પિતા
કાલે આપણે માતા અને પિતા

આપણા થી જ આ રહે સુખી સંસાર
એટલે કદી ન ભૂલો માતાપિતા પ્રેમ

જે મંદિર છે તે જ પ્રભુ છે
સદા કરો શરણાગત ટેક
પામશું સુખી સંસાર
રાખીશું ખુશી ખુશી સંભાળ
આ જ આનંદ આ જ પરમાનંદ
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" द्वार "

नैन द्वार

मन द्वार

नासिका द्वार

अधर द्वार

कर्ण द्वार

गृह द्वार

मंदिर द्वार

कार्यालय द्वार

गांव द्वार

शहर द्वार

बाजार द्वार

यातायात द्वार

लोक द्वार

अर्थात द्वार से ही प्रवेश

हर रोज हम कितने द्वार पर होते है?

द्वार से ही प्रारंभ

द्वार से ही आरंभ

हमारा द्वार योग्य हम सदा योग्य

हमारा द्वार हमारी लायकात

हमारा द्वार हमारी काबिलियत

हमारा द्वार हमारी नियत

हमारा द्वार हमारी संगत

हमारा द्वार हमारी कर्मठ

हमारा द्वार हमारी गत

हमारा द्वार 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मुझे हर एक ने कहा श्री प्रभु स्मरण में रहो

मुझे हर एक ने कहा श्री प्रभु स्मरण करो

मुझे हर एक ने कहा श्री प्रभु स्मरण ही यह समय का मुख्य कारण है

मैंने कहा - ओहहह! कितनी ऊंची गहरी अनोखी सीख

मैं सदा स्मरण में रहा

मैंने आनंद पाया

मुझे सुख मिला

मुझे खुशी मिली

मुझे प्रीत मिली

मुझे जीत मिली

मुझे पुण्य मिला

मुझे स्वर्ग मिला

मुझे गौलोक मिला

मैं आपका हृदय नमन से आभार जताता हूं 🌷🙏🌷

आपसे मैंने वह पाया जो दुर्लभ है

आपको हृदयगम्य आत्मजन्य विनंती करता हूं की मेरी गति आपको न्योछावर हो और मैं सदा आपका दास हो कर रहूं।

आप अवश्य मेरी विनंती स्वीकारें 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बारिश ने अपना हास बिखेरा, नीले खेतों ने अपना रंग उंडेला, फूलों ने अपनी यौवनता का आकर्षण जगाया, तो लोलुप भ्रमरों की टोली गुलजार गाने लगी।

यही वातावरण में कहीं दूर से मधुर स्वर गूंजता साथ में खनकती चूड़ियों की झंकार अपने प्रिय निकुंज की ओर कदम भरती आ रही है।

एक सखि ने पूछा - अरि! यह मधुर स्वर तो अपने प्रियतम कान्हा का ही है, तुरंत दूसरी सखि बोली - अरि! वह चूड़ियों की खनखन हमारी प्रिया राधा की ही है। दोनों साथ साथ हाथों में हाथ पकडे निकुंज की ओर ही आ रहे हैं।

हां! तो चलो हम उन्हें सताये!

हम ऐसा खेल रचे की हमारी राधा रानी उन्हें अपने प्यारे रंगों से रंग दे, यही रंग में हम भी उनके हो जाये।

हां हां! बिलकुल

दोनों सखियां दौड़ कर वह लीला की तैयारी में जुट गए।

इधर प्रेमी युगल अपनी धून में प्रेम की बौछार लुटाते लुटाते निकुंज द्वार पहुंच गए।

कान्हा बोले - प्रिये! आज निकुंज खुबसूरत, रंग सभर निरव शांत वातावरण छाये क्यूं बैठी है?

प्रिया बोली - प्राणेश्वर! कोई अनोखी लीला का संकेत दे रही है।

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

आगे कल 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
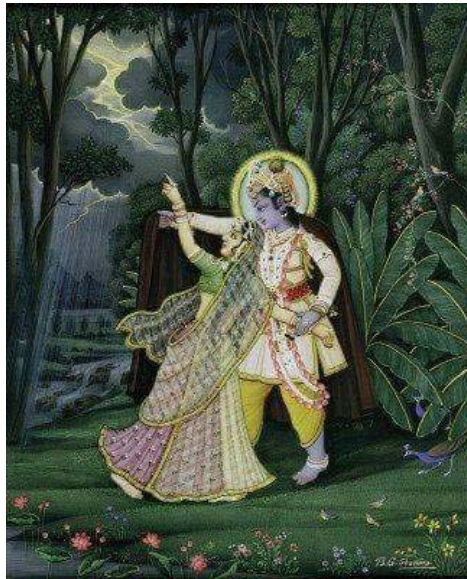
श्री नाथजी मेरे प्रिय
मैं आया नाथद्वारा के द्वार
तु करें मेरी सदा पुकार
मैं आया नाथद्वारा के द्वार

रंग बिरंगी धजा जो लहरें
मन मोहक तेरी नगरी दिशे
मैं तो हो गया श्रीनाथ दास
मैं आया नाथद्वारा के द्वार

भक्त भक्त जो टहल पुकारे
श्री कृष्ण: शरणं मम मुखारे
मैं तो हो गया श्रीनाथ पिपासु
मैं आया नाथद्वारा के द्वार

आंठ शमां के तु दर्शन काजे
तु खड़ा रहे मिलन के साजे
मैं तो हो गया श्रीनाथ रास
मैं आया नाथद्वारा के द्वार

मंगल शृंगार ग्वाल राजभोग
रुप रंग तेरा अनेकों आयोग
मैं तो हो गया श्रीनाथ सुयोग
मैं आया नाथद्वारा के द्वार

उत्थापन भोग संध्या शयन
तन मन धन मेरा हुआ वरण
मैं तो हो गया श्रीनाथ शरण
मैं आया नाथद्वारा के द्वार

हे नाथद्वारा के श्री नाथ
तु हाथ ऊंचों करें मेरो साद
कहीं रहूं कैसा भी हूं
मैं पूनम को दौडी आऊं पास
हरख हरख मैं तेरे दर्शन ध्याऊं
जनम जीवन की प्यास बुझाऊं
हे नाथ! मुझे देना पुष्टि प्रसाद
मैं आया नाथद्वारा के द्वार
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

શ્રી વલ્લભ તારું નામ
શ્રી વલ્લભ તારું કામ
મને પુષ્ટિ જગાવે
મને પ્રેમ જગાવે

વલ્લભ સ્મરણ માં મનડું જાગે
અંગ અંગ માં તારું સ્પંદન જાગે
તારું અનોખું આકર્ષણ
મને પુષ્ટિ જગાવે
મને પ્રેમ જગાવે
શ્રી વલ્લભ તારું નામ
શ્રી વલ્લભ તારું કામ

વલ્લભ સિદ્ધાંત માં જીવન જાગે
વલ્લભ નિર્દેશ માં જ્ઞાન જાગે
છુટે સંસાર અંધકાર
મને પુષ્ટિ જગાવે
મને દ્રષ્ટિ જગાવે
શ્રી વલ્લભ તારું નામ
શ્રી વલ્લભ તારું કામ

વલ્લભ ધ્યાન માં આતમ હરખે
વલ્લભ રંગ માં દેહ ઉજળે
પ્રકટે પુષ્ટિ જ્યોત
મને કર્મ જગાવે
મને ધર્મ જગાવે
શ્રી વલ્લભ તારું નામ
શ્રી વલ્લભ તારું કામ

વલ્લભ વલ્લભ
વલ્લભ વલ્લભ
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक योगी सदा श्री यमुनाजी के सानिध्य में मथुरा रहता था। नित्य सेवा - सदा जो भी व्यक्ति उनके पास आये तो वह श्री यमुनाजी पूजन करवाता और आखिर में कहता - आज श्री यमुनाजी तुमसे मिलने आयेगी।

आसपास हर कोई यह व्याक्य सुनता और चले जाते। साथ साथ वह व्यक्ति भी चला जाता जिससे योगीजी ने पूजन करवाया।

ऐसे ऐसे कहीं समय निकल गये, योगी यही ही एकाग्रता से जो भी उनके पास आये उन्हें पूजन करवाता और आखिर में यही ही कहता - आज श्री यमुनाजी तुम्हें मिलने आयेगी।

एक दिन एक व्यक्ति आया और सीधा वह योगी के चरणों में दडंवत प्रमाण करके तुरंत बोला - हे योगीजी!

आप धन्य हो - आपके आशीर्वाद से श्री यमुनाजी हमारें घर पधारे, मुझे और हर कोई को आनंद करके अपने स्थानक चली जाती है।

योगी ने कुतहल वह उनकी ओर देख कर हंसने लगे 🌷🙏🌷

ऐसा क्रम करीब १० मास से श्री यमुनाजी निभा रहते हैं। आज जैसे वह व्यक्ति योगीजी के पास आया तो योगीजी ने उन्हें एक माल्याजी और एक वस्त्र दिया और कहा - आज पधारे श्री यमुनाजी तो उन्हें माल्याजी अर्पण करना और विनंती करना यह वस्त्र आप धारण करना 🌷🙏🌷

वह व्यक्ति दोनों वस्तुएं लेकर अपने घर पहुंचा। थोड़ी ही देर में श्री यमुनाजी पधारे और कहां वह माल्याजी और वस्त्र मुझे दो।

वह व्यक्ति अचंभित हो गया, और तुरंत ही नमन करके कहा - हे माता! धन्य हूं! आप मेरे घर पधारे 🌷🙏🌷

श्री यमुनाजी ने कहा - हे आत्म श्रेष्ठ! वह योगीजी प्रखर पंडित और मेडिकल स्नातक हैं। उनके स्पर्श से मैं शुद्ध हो जाती हूं।

जैसे तुमने मेरे बूंद का आचमन किया तुम शुद्ध हो गये। इसलिए मैं तुम्हें हर रोज मिलने आती हूं। मेरा वास सदा विशुद्ध भक्ति में रहता है।

आज भी यह क्रम चलता है और वह योगीजी आज भी मथुरा के यमुना घाट पर ऐसे व्यक्तिओं को श्री यमुनाजी पूजन करवाता है। 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि – हे कान्हा !

"Vibrant Pushti"

Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

" Vibrant Pushti "

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com

" जय श्री कृष्ण "